



# अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.org

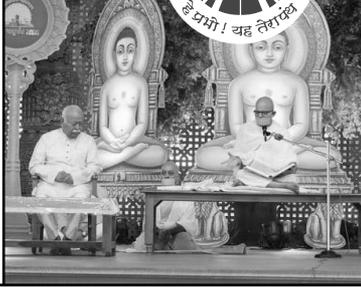
गुरु भगता श्रावक कर्ने,  
गुरु रा गुण बोले ताम।  
आपो वश हुवे जाणं तिण कर्ने,  
ओगुण बोले तिण ठंम।।  
- आचार्य श्री भिक्षु

नई दिल्ली / वर्ष 26 • अंक 04 • 28 अक्टूबर-03 नवम्बर, 2024 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 26-10-2024 • पेज 12 ₹ 10 रुपये



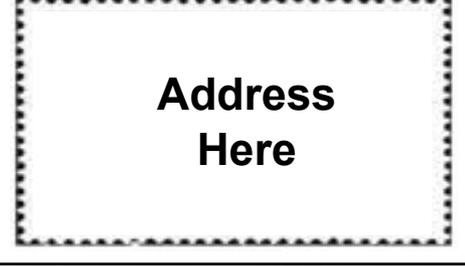
सम्यक् दृष्टि एवं चारित्र  
का धारक होता  
है मुनि : आचार्यश्री  
महाश्रमण

पेज 11



क्षमा, समानता और  
समता का रखें  
भाव : आचार्यश्री  
महाश्रमण

पेज 12



## स्वस्थ, उदार और सहनशील हो मुखिया : आचार्यश्री महाश्रमण

पूज्यवर ने की सन् 2030 में बृहत्तर जयपुर में त्रिमासिक प्रवास की घोषणा

सूत्र।

20 अक्टूबर, 2024

जिनशासन के कुशल प्रहरी आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आगमवाणी की अमृतवर्षा करते हुए फरमाया कि जो शीत और उष्ण को सहन करता है वह निर्ग्रन्थ होता है। सामान्यतः ठंडक शीत होती है। सर्दी को सहन करना भी धर्म है, और गर्मी को सहन करना भी साधु का धर्म है। शीत का एक और अर्थ यह है कि वह अनुकूल परिस्थिति को दर्शाता है, जबकि उष्ण प्रतिकूल परिस्थिति को दर्शाता है।

संत वह होता है जो शांत होता है। गुस्से के सन्दर्भ में व्यक्ति चार प्रकार का हो सकता है - उत्तम, मध्यम, अधम, और अधमाधम। उत्तम व्यक्ति को गुस्सा आता है और चला जाता है। जिसका गुस्सा थोड़ी देर रहता है, वह मध्यम है। जिस व्यक्ति को दिन-रात पर्यन्त गुस्सा रहता है वह अधम है और जीवनभर रहने वाला गुस्सा अधमाधम व्यक्ति के होता है। साधु को शांति का साधक होना चाहिए। गृहस्थ के लिए भी ज्यादा गुस्सा लाभकारी नहीं होता।

मुखिया के लिए यह आवश्यक है कि उसका



स्वभाव कैसा है, चाहे वह मुखिया परिवार, समाज, या राष्ट्र का हो। मुखिया स्वस्थ, उदार, और अनुकूलता-प्रतिकूलता को सहन करने वाला होना चाहिए, साथ ही उसे धैर्यवान और ईमानदार भी होना चाहिए। कार्यकर्ता में भी सहनशक्ति और समय का समर्पण करने की क्षमता होनी चाहिए। चतुर्मास की व्यवस्था के लिए एक व्यापक

प्रबंधन तंत्र की आवश्यकता होती है। मुखिया को अवसर पर मौन रहना चाहिए। कहा जाये तो सहा भी जाना चाहिए।

जयपुर का संघ पूज्यवर की उपासना में पहुंचा। पूज्यवर ने कृपा करते हुए फरमाया कि आज कार्तिक कृष्णा तृतीया है, जो कि पूज्य आचार्यश्री माणकगणी का महाप्रयाण दिवस है। माणकगणी

के संदर्भ में पूज्यवर ने बताया कि वे जयपुर से थे, और पूज्य जयाचार्य का जन्म और महाप्रयाण भी जयपुर में हुआ था। पूज्यवर ने जयपुर की जनता को तृप्त करते हुए फरमाया - 'सन् 2030 में बृहत्तर जयपुर में यथासंभवतया कम से कम तीन महिनों का प्रवास करने का भाव है।' आचार्यश्री की इस घोषणा से जयपुरवासी आह्लादित हो कर जयघोष करने लगे। शांतिलाल गोलेछा ने अपने हृदयोद्गार व्यक्त किए। जयपुर से सम्बद्ध महिलाओं ने अपनी प्रस्तुति दी।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि सुख और दुःख का कर्ता कौन है, भोक्ता कौन है, देने वाला कौन है, और समाप्त करने वाला कौन है? ईश्वरवादी परम्परा में ईश्वर को कर्ता माना जाता है, जबकि आत्मवादी परम्परा आत्मा को ही सुख-दुःख का कर्ता और भोक्ता मानती है। सुख को लौकिक-लोकोत्तर, शाश्वत-अशाश्वत, भौतिक-आध्यात्मिक, और शारीरिक-मानसिक के रूप में बताया गया है। सुख के दस प्रकार भी बताए गए हैं। सबसे बड़ा सुख संतोष का है, और उससे भी बड़ा अनाबाध सुख मोक्ष का सुख होता है।

(शेष पेज 10 पर)

## आत्मा को राग द्वेष मुक्त कर वीतराग बनने का करें प्रयास : आचार्यश्री महाश्रमण

स्वामीनारायण संप्रदाय के संत नारायण मुनिदासजी आदि संतों का हुआ समागमन

सूत्र।

18 अक्टूबर, 2024

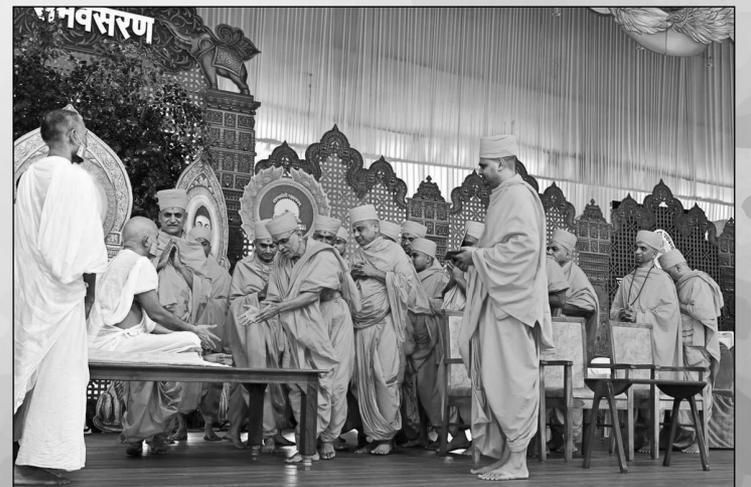
महामनीषी पूज्य आचार्य प्रवर ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारे शास्त्र, जो जैन श्वेताम्बर परंपरा के हैं, उन्हें आगम कहा जाता है। हमारे यहां 32 आगम मान्यता प्राप्त हैं। संप्रदायों में आचार, विचार, मर्यादा, वेशभूषा में थोड़े-बहुत अंतर हो सकते हैं, पर अहिंसा का भाव बना रहना चाहिए। सभी संप्रदायों में सद्भावना और

मैत्री भाव रहना चाहिए। जो सार है, वही हमारा है। यदि कहीं से अच्छी बात मिले, तो उसे ग्रहण करने की बुद्धि होनी चाहिए। अच्छी बातों का अनुमोदन करना चाहिए।

शब्द, रूप, रस, गंध और स्पर्श- ये पांच विषय हमारे पास हैं, जिन्हें हम इंद्रियों के माध्यम से ग्रहण करते हैं। पांच इंद्रियां, पांच विषय, और पांच व्यापार हो जाते हैं। इन इंद्रियों से हम ज्ञान प्राप्त करते हैं। राग-द्वेष करना हमारी विकृति है। हमें प्रकृति में रहते

हुए संयम रखना चाहिए। जो चीज ग्रहण करने योग्य है, उसे ग्रहण कर लें, जो नहीं है, उससे दृष्टि हटा लें।

इन पांच विषयों को सुनकर जो राग-द्वेष नहीं करता, वह ज्ञानवान है। मुनि पृथ्वी के समान समता भाव से सहन करता है, गुस्सा नहीं करता। कोई शरीर का नाश कर सकता है, पर आत्मा को नहीं मार सकता। जैन साधु पांच महाव्रतधारी होते हैं, और रात्रि भोजन का भी त्याग करते हैं। वे अहिंसा का सजगता से पालन करते हैं। (शेष पेज 10 पर)



# राग को कम कर आत्म कल्याण के पथ पर बढ़ें आगे : आचार्य श्री महाश्रमण

## पूज्यवर की सन्निधि में आयोजित हुआ राष्ट्रीय ज्ञानशाला प्रशिक्षक सम्मेलन एवं दीक्षांत समारोह

सूरत।

19 अक्टूबर, 2024

सदसंस्कारों के प्रदाता, ज्ञान के अथाह सागर आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि आगम में कहा गया है - साधु साधनाशील होता है। साधना में जागरूक रहना भी आवश्यक है, क्योंकि मोहनीय कर्म के प्रभाव से साधना प्रभावित हो सकती है।

मोहनीय कर्म का एक हिस्सा है - संग, राग, और आसक्ति। साधु इस आसक्ति को खतरनाक समझे और इसे आवृत्त स्रोत के रूप में समझे। इन्द्रियों में आसक्ति होने से मन भ्रंत हो जाता है और उसमें फंस जाता है। यह राग का आवरण है। राग के बिना आत्मा में द्वेष नहीं होता। क्रोध, मान, और माया नौवें गुणस्थान में क्षय हो जाते हैं, जबकि लोभ दसवें गुणस्थान तक बना रहता है। क्रोध और मान द्वेष हैं, जबकि माया और लोभ राग हैं।

साधु के लिए कहा गया है कि कहीं भी ममता का भाव न रखें और किसी भी चीज़ से बंधे न रहें। मुनि राग से विरक्त



रहने का प्रयास करें। गृहस्थ जीवन में भी यदि आगे बढ़ना है तो राग को कम करना चाहिए। राग के समान दुःख नहीं है, और त्याग के समान सुख नहीं है। राग को छोड़ें और त्याग का मार्ग अपनाएं। जितना व्यक्ति त्याग के पथ पर आगे बढ़ता है, उतना ही आत्म-कल्याण की ओर आगे बढ़ सकता है।

त्याग का सुख स्व-अवस्था का है, जबकि राग का सुख परवशता का है। जो पर के वश में है वह दुःख है, और जो स्व के वश में है वह सुख है। हमें स्वावलंबी बनना चाहिए ताकि हम सुखी बन सकें।

दो हाथ और दो पैर - ये चार नौकर हमारे स्वस्थ रहें, तो हम परवश नहीं होंगे। दूसरे पर निर्भर न रहें। परस्पर सहयोग की बात अलग है। निःसंग और असंग रहें। संग का अर्थ है स्रोत, और स्रोत का अर्थ है द्वार। हमारे शरीर में भी नौ द्वार हैं, जिनसे शरीर की गंदगी निकलती है। इस गंदगी से जिन्दगी बनी रहती है। गृहस्थ भी जितना आसक्ति से बचकर रहेगा, उतना अच्छा है। संयम का भूषण आत्मा के साथ रहे। बाहरी आभूषण भार हैं। जीवन में सादगी और संयम रखें। अराग का भाव बढ़े। उग्र के आखिरी पड़ाव में अपरिग्रही बनें, और

धार्मिक-आध्यात्मिक सेवा करें। आसक्ति को जितना हो सके कम करने का प्रयास करें। आचार्यप्रवर ने तेरापंथी श्रावकों को यथासंभवतया सुमंगल साधना की दिशा में आगे बढ़ने की प्रेरणा प्रदान की।

पूज्यवर की सन्निधि में आयोजित राष्ट्रीय ज्ञानशाला प्रशिक्षक सम्मेलन एवं दीक्षांत समारोह के सन्दर्भ में राष्ट्रीय संयोजक सोहनराज चौपड़ा तथा महासभा के संगठन मंत्री प्रकाश डगलिया ने अपनी अभिव्यक्ति दी। सूरत ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने गीत की प्रस्तुति दी। पूज्यवर ने आशीर्वचन प्रदान करते हुए

**त्याग का सुख स्व-अवस्था का है, जबकि राग का सुख परवशता का है। जो पर के वश में है वह दुःख है, और जो स्व के वश में है वह सुख है। हमें स्वावलंबी बनना चाहिए ताकि हम सुखी बन सकें।**

फरमाया कि ज्ञान वह होता है जिससे व्यक्ति राग से मुक्त होकर कल्याण में संयुक्त हो जाए। अध्यात्म विद्या भी ज्ञान का अंग है। ज्ञानशाला उस आध्यात्मिक ज्ञान का प्रारंभिक रूप है। जगह-जगह छोटे-छोटे बच्चे ज्ञानशाला से जुड़कर ज्ञान प्राप्त करते हैं। हजारों प्रशिक्षक प्रशिक्षण दे रहे हैं, यह निष्पत्ति-मूलक कार्य है। व्यवस्था पक्ष भी मजबूत होना चाहिए। प्रशिक्षक अपने ज्ञान का विकास करते रहें। संख्यात्मक विकास के साथ-साथ गुणवत्ता भी बढ़ती रहे। जयपुर से समागत नरेश मेहता ने अपनी भावनाएं प्रकट की। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

# अप्रमत्त, जागृत और मित्र होता है वीर : आचार्यश्री महाश्रमण

सूरत।

21 अक्टूबर, 2024

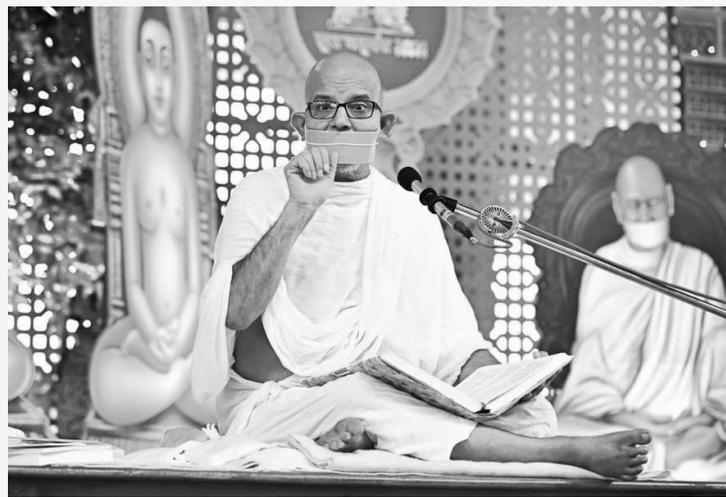
धर्म चक्रवर्ती आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि आगम में वीर की एक परिभाषा बताई गई है। वीर कौन होता है? आमतौर पर, संग्राम में निडरता से लड़ने वाले को या बहादुरी का कार्य करने वाले को वीर कहा जाता है। जब अध्यात्म और धर्म की बात आती है, तो वीर की परिभाषा अलग होती है।

वीर वह होता है जो जागृत रहता है। जहां सुप्तता होती है, वहां खतरा हो सकता है। जागरूक रहने वाला अप्रमत्त होता है। प्रमाद को छोड़ देना एक बड़ी बहादुरी का काम होता है। जो न मद्य का नशा करता है, न विषय कषाय के सेवन में संलग्न होता है और न विकथा में जाता है, अनावश्यक नींद भी नहीं लेता है तो वह जागरूक व्यक्ति वीर होता है। सबल व्यक्ति प्रमाद से मुक्त रह सकता है।

जीता वही है जो जागता है। प्रवचन श्रवण के समय निद्रा में न जाएं। पूज्यवर

ने आचार्य भिक्षु और आसोजी के प्रसंग से समझाया कि जागरूक रहकर व्याख्यान का लाभ लेना चाहिए। जिस समय जो कार्य करना उचित हो, वही कार्य करना चाहिए। व्याख्यान को ध्यान से सुनना बेहतर है। अगर वक्ता की बात समझ में नहीं आती, तो नींद आ सकती है। जो अप्रमत्त है और मूर्च्छा-आसक्ति से मुक्त है, वही वीर है। जो अप्रमत्त है, वह निर्भय रह सकता है।

वीरता का एक और लक्षण बताया गया कि वीर वैर से उपरत रहता है। बात-बात में गुस्सा करना एक कमजोरी है, गुस्सा न करना वीरता है। किसी से वैर नहीं करें, सभी प्राणियों के साथ हमारी मित्रता होनी चाहिए। चाहे सामने वाला हमारी कितनी भी निन्दा करे, पर वैर न रखें। तर्कहीन या नास्तिक से भी वैर नहीं रखें। वैचारिक भेद हो सकते हैं, पर सभी को अपना अच्छा कार्य करना चाहिए। वैर है तो अवीर है, अवैर है तो वीर है। हमारी मैत्री भावना सामने वाले को अपना बना सकती है, अहिंसा की प्रतिष्ठा हो जाती है। गृहस्थ भी परिवार और समाज में



रहते हुए किसी से वैर भाव न रखें। सभी के साथ मैत्री भाव रखें; यह धर्म और अध्यात्म की बात है। अच्छा करने वाले के साथ अच्छा व्यवहार रखना अच्छा है, लेकिन बुरा करने वाले के साथ भी अच्छा व्यवहार रखना विशिष्टता है। प्रवचन के पश्चात पूज्यवर ने बोधार्थी बहनों को कुछ प्रश्न पूछे और प्रेरणाएं प्रदान की।

साध्वीवर्या संबुद्धयशाजी ने कहा कि मन साहसी, भयंकर और दुष्ट घोड़े की तरह दौड़ने वाला होता है। मन की

गति सबसे तेज होती है। मन का सुख और दुःख के साथ संबंध होता है। मन की अपेक्षा से जीव तीन प्रकार के होते हैं - असंज्ञी, संज्ञी, और नो संज्ञी नो असंज्ञी। चतुरिन्द्रिय तक के जीव असंज्ञी होते हैं; उनमें मन नहीं होता। पंचेन्द्रिय जीव असंज्ञी और संज्ञी दोनों हो सकते हैं। वीतराग जीव नो संज्ञी नो असंज्ञी होते हैं। मन के तीन कार्य होते हैं - चिंतन, स्मृति, और कल्पना। संसार में सुख-दुःख साथ-साथ रह सकते हैं। असंज्ञी जीवों का

दुःख अल्प समय के लिए होता है, जबकि संज्ञी मनुष्य का दुःख लम्बे समय तक रह सकता है। मन का विकास वरदान है, पर कभी-कभी यह अभिशाप भी बन सकता है। रचनात्मक और सकारात्मक सोच रहे तो मन का विकास वरदान बना रहता है।

अमृतवाणी के मंचीय कार्यक्रम में मंत्री अशोक पारख एवं निवर्तमान अध्यक्ष रूपचन्द दुगड़ ने अपनी भावनाएं व्यक्त की। नवनिर्वाचित अध्यक्ष ललित दुगड़ ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए अपनी टीम की घोषणा की। अमृतवाणी द्वारा आचार्यश्री तुलसी व आचार्यश्री महाप्रज्ञजी की विडियो क्लिप प्रस्तुत की गई। आचार्यश्री ने नवनिर्वाचित टीम को मंगल आशीर्वाद प्रदान किया।

सारिका नाहटा ने अपनी पुस्तक 'ज्ञानकुंज' को पूज्य चरणों में लोकार्पित किया। खेड़ब्रह्मा (गुजरात) से पटेल समाज के अनेक व्यक्ति पूज्यवर की पावन सन्निधि में पहुंचे। बसंत भाई पटेल ने अपनी भावनाएं व्यक्त की।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

# आंचलिक प्रबुद्ध महिला सेमिनार प्रवर्द्धन का हुआ आयोजन

राजसमन्द।

साध्वी डॉ.परमप्रभा जी एवं साध्वी लब्धियशा जी के सान्निध्य में राष्ट्रीय अध्यक्षा सरिता डागा की अध्यक्षता में मेवाड़ आंचलिक प्रबुद्ध महिला सेमिनार प्रवर्द्धन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री ने नमस्कार महामंत्र से किया। महिला मंडल की बहनों ने प्रेरणा गीत की सुंदर प्रस्तुति दी। महिला मंडल की बहनों द्वारा संवाद के रूप में एक नाटिका प्रस्तुत की गई जिसमें 6 दशक पहले एवं आधुनिक समय की महिलाओं का तुलनात्मक विवेचन किया गया। तेरापंथ कन्या मंडल की कन्याओं द्वारा अतिथियों का स्वागत किया गया। साध्वी डॉ. परमप्रभा जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि महिला किसी भी क्षेत्र में हो, नैतिक रूप से स्वस्थ रहे। साध्वी लब्धियशाजी ने अपने वक्तव्य में कहा कि अगली सदी महिलाओं की होगी तथा सभी निर्णय महिलाओं की सहमति से होंगे। आचार्य श्री तुलसी ने सब कुरीतियों को हटाने के लिए महिलाओं को नींव का पत्थर बनाया। सहवर्ती साध्वियों ने सामूहिक संगान प्रस्तुत किया। स्थानीय महिला मंडल अध्यक्षा सुधा कोठारी ने पधारी हुई समस्त महिला शक्ति एवं अतिथियों का स्वागत किया। राष्ट्रीय अध्यक्षा सरिता डागा ने संभागियों



को संबोधित करते हुए कहा कि मेवाड़ स्तरीय आंचलिक प्रबुद्ध महिला सेमिनार प्रवर्द्धन दो जगह पर हुआ, पर राजनगर का सेमिनार सर्वश्रेष्ठ रहा। यहां पर प्रबुद्ध महिलाओं की उपस्थिति भी अच्छी रही। अगली कार्यशाला संरक्षण आ रही है। महिला यदि किसी भी विषय पर अपना स्वतंत्र चिंतन रखती है व अपने परिवार का सिंचन करने वाली है तो वह प्रबुद्ध महिला की श्रेणी में आती है। भिक्षु बोधिस्थल सभाध्यक्ष हर्षलाल नवलखा ने पधारे हुए सभी अतिथियों का स्वागत अभिनंदन किया। अभातेममं कार्यकारिणी सदस्या व मेवाड़ प्रभारी डॉ. नीना कावड़िया ने कहा कि मेवाड़ में श्रद्धा कूट-कूट कर भरी है। मुख्य अतिथि राजसमंद जिला प्रमुख रतनी देवी जाट ने कहा कि महिलाएं आगे बढ़ें, हम उनके साथ हैं।

द्वितीय सत्र में महामंत्री नीतू ओस्तवाल एवं अभातेममं कार्यकारिणी सदस्य उषा सिसोदिया ने मॉडरेटर की भूमिका निभाते

हुए टॉक शो के माध्यम से जिज्ञासा-समाधान का संचालन किया। सेमिनार में पैनलिस्ट के रूप में चेतना भाटी (डीवायएसपी उदयपुर), भुवनेश्वरी जडेजा शक्तावत (सेलिब्रिटी स्किन कोच उदयपुर), वर्षा कृपलानी (समाज सेविका, निम्बाहेड़ा) की उपस्थिति रही। लगभग 450 बहनें, 57 प्रबुद्ध बहनों के साथ कन्या मंडल, विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारी एवं गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति भी रही। राजनगर की युवती बहनों द्वारा बनाये गए त्याग ट्री के माध्यम से 150 बहनों ने त्याग के संकल्प स्वीकार किये। तेममं राजनगर द्वारा समस्त पधारी हुई प्रबुद्ध बहनों का एवं मेवाड़ से समागत सभी महिला मण्डल का अभिनंदन किया गया। कार्यक्रम का सफल संचालन संयोजिका रितु धोका एवं सहमंत्री डोली बड़ोला द्वारा किया गया। आभार तेरापंथ महिला मंडल की मंत्री चेष्टा धोका ने किया।

## जीवन के लिए जितना श्वास जरूरी है, उतना ही ध्यान

गांधीनगर, बैंगलोर।

तेरापंथ भवन में साध्वी उदितयशाजी के सान्निध्य में 50वें प्रेक्षाध्यान कल्याण वर्ष के शुभारंभ के अवसर पर साध्वी उदितयशाजी ने ध्यान की प्राचीनता की व्याख्या करते हुए कहा कि ध्यान की गहराई में जाने वालों को कभी समस्या दुःखी नहीं कर सकती। जीवन के लिए जितना श्वास जरूरी है, उतना ही ध्यान जरूरी है। ध्यानी व्यक्ति अभाव में भी दुःखी नहीं होता, क्योंकि उसकी ऊर्जा का ऊर्ध्वारोहण हो जाता है। ज्योति का ध्यान करने वाला अंधकार को दूर भगा देता है। ज्ञान की चाबी हमें आचार्य श्री महाप्रज्ञजी ने प्रदान की है, जिससे हम आनंद का ताला खोल सकते हैं।

साक्षात्कार प्रेक्षाध्यान के द्वारा' गीत का संगान कर कहा कि पूर्वजन्मों की विशिष्ट साधना के अपने चेतसिक अनुभवों को कई वर्षों तक कसौटी पर कसने के बाद एक अनुभूत पद्धति प्रेक्षाध्यान का आविष्कार करने वाले आचार्य महाप्रज्ञ एक विशिष्ट योगी थे। साध्वी भव्ययशाजी ने 'आनन्दो मे वर्ष ति - वर्ष ति' भावना से साधकों को भावित किया। सभा मंत्री विनोद छाजेड़ ने आचार्य श्री महाश्रमण जी के प्रेक्षाध्यान कल्याण वर्ष के उपलक्ष में प्रदत्त संदेश का वाचन किया। प्रेक्षा फाउंडेशन व प्रेक्षा इंटरनेशनल से जुड़ी प्रेक्षाध्यान प्रशिक्षिका रेणु कोठारी ने प्रेक्षा ध्यान शिविर एवं संबंधित ऐप की जानकारी दी। कार्यक्रम का संचालन साध्वी संगीतप्रभाजी ने किया।



अखिल भारतीय  
तेरापंथ  
टाइम्स  
ध्यानी व्यक्ति  
अभाव में भी दुःखी  
नहीं होता, क्योंकि  
उसकी ऊर्जा का  
ऊर्ध्वारोहण हो  
जाता है।

## अनन्त खजाने को प्राप्त करने की अमूल्य निधि है - प्रेक्षाध्यान

चेम्बूर, मुंबई।

साध्वी राकेशकुमारीजी के सान्निध्य में प्रेक्षा ध्यान कल्याण वर्ष के शुभारंभ कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रेक्षा प्रशिक्षकगण द्वारा प्रेक्षागीत की स्वर लहरियों से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ।

साध्वी राकेशकुमारीजी ने कहा- प्रेक्षाध्यान शुभारंभ के 50 वर्ष की सम्मन्ता पर आचार्यश्री महाश्रमण जी द्वारा "प्रेक्षा कल्याण वर्ष" की घोषणा की गई, जिसके अंतर्गत पूरे वर्ष प्रेक्षाध्यान शिविर आदि के माध्यम से जन-जन की चेतना को जागृत करने का उपक्रम चलाया जायेगा।

साध्वीश्री ने आगे कहा- चित्त की

निर्मलता, भावों की विशुद्धि करना प्रेक्षाध्यान का प्रयोजन है। भीतर में छिपे अनन्त खजाने को प्राप्त करने की अमूल्य निधि है - प्रेक्षाध्यान। प्रेक्षाध्यान की पृष्ठभूमि है त्रिगुप्ति की साधना करना। त्रिगुप्ति की साधना फलवान होने पर ही चैतन्य जागरण की दिशा में अभूतपूर्व क्रांति घटित होती है। साध्वी मलयविभाजी ने चार चरणों में प्रेक्षाध्यान का प्रैक्टिकल प्रयोग करवाया।

साध्वी विपुलयशाजी ने कुशलता से संचालन किया। महाराष्ट्र सह प्रभारी सीमा चौरडिया ने प्रेक्षाध्यान कल्याण वर्ष की जानकारी प्रस्तुत की। तेरापंथ सभाध्यक्ष रमेश धोका ने आचार्य प्रवर के संदेश का वाचन किया।

साउथ हावडा।

मुनि जिनेशकुमार जी के सान्निध्य में एवं प्रेक्षा फाउंडेशन के तत्त्वावधान में प्रेक्षाध्यान कल्याण वर्ष शुभारंभ समारोह का आयोजन साउथ हावडा श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा द्वारा प्रेक्षा विहार में किया गया। इस अवसर पर उपस्थित धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनिश्री ने कहा जिस साधक का मन-रुपी जल राग-द्वेष की तरंगों से चंचल नहीं है, स्थिर है, वह आत्मतत्त्व को देखता है। उस तत्व को दूसरा व्यक्ति नहीं देख सकता।

हमारा चित्त जल से भरा हुआ शांत सरोवर है। सरोवर में छोटा-सा कंकर डालते ही वह अस्थिर हो जाता है, तरंगित हो जाता है। इसी प्रकार हमारा चित्त भी राग-द्वेष की तरंगों से चंचल हो उठता है।

उसे शांत बनाए रखने का अमोघ साधन है - ध्यान। ध्यान एक अलौकिक दिव्य शक्ति है। ध्यान अध्यात्म साधना का सोपान व रिद्धि-सिद्धि का दाता है। ध्यान से आचार शुद्धि, विचार शुद्धि, भाव शुद्धि होती है। प्रेक्षाध्यान साधना का नवनीत है। ध्यान से आत्म दर्शन संभव है। आज चारों ओर तनाव का माहौल है, तनाव मुक्ति का उपाय प्रेक्षाध्यान है। मुनिश्री ने आगे कहा कि भगवान महावीर ध्यान के महान साधक व ध्यान के सचेतक प्रयोक्ता थे। आचार्य श्री तुलसी की सन्निधि में आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी ने अपनी साधना के द्वारा समाज को प्रेक्षाध्यान का आयाम दिया। आचार्य श्री महाश्रमण जी ने प्रेक्षाध्यान की अर्ध शताब्दी के पूर्णता पर इस वर्ष को प्रेक्षाध्यान कल्याण वर्ष घोषित किया। सभी संस्थाओं के सदस्य भी प्रेक्षाध्यान

की साधना करने का प्रतिदिन दस मिनट लक्ष्य रखें। मुनिश्री ने प्रेक्षाध्यान के प्रयोग कराए। कार्यक्रम का शुभारंभ मुनि कुणाल कुमार जी के प्रेक्षागीत के संगान से हुआ। स्वागत भाषण साउथ हावडा श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष लक्ष्मीपत बाफणा ने दिया।

प्रेक्षा इंटरनेशनल के प्रतिनिधि रणजीत दुगड़, प्रेक्षा फाउंडेशन के प्रतिनिधि ईस्ट जोन कोर्डिनेटर मंजु जैन सिपानी ने प्रेक्षाध्यान के संदर्भ में विचार व्यक्त किये। आचार्य श्री के संदेश का वाचन संजय पारख ने किया। प्रेक्षाध्यान के विभिन्न कार्यक्रमों एवं प्रवृत्तियों की जानकारी की प्रस्तुति प्रेक्षा प्रशिक्षिकाओं ने प्रदान की। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद ने किया। प्रेक्षा प्रशिक्षिकाएं व श्रावक-श्राविकाएं अच्छी संख्या में उपस्थित थे।



## संक्षिप्त खबर

# समृद्ध राष्ट्र योजनांतर्गत छठे सेशन कार्यक्रम का आयोजन

दिल्लालगढ़। विद्यालय संरक्षण के अंतर्गत छठे सेशन का कार्यक्रम स्थानीय शासकीय उच्च बालिका विद्यालय में हुआ। अध्यक्ष बबिता जैन ने बच्चों को महाप्राण ध्वनि और वज्रासन के प्रयोग कराए और पॉजिटिव अफरमेशन के लाभ बताए। पायल जैन ने सत्य और ईमानदारी का महत्व समझाने के लिए एक कहानी सुनाई, जबकि मंत्री दीपिका जैन एवं कोषाध्यक्ष पूजा जैन ने अपने विचार साझा किए। बच्चों के बीच स्पीच, गीतिका और नाटिका प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें उन्होंने उत्साह से भाग लिया। कार्यक्रम के अंत में, विजेताओं को पुरस्कार और सभी भाग लेने वालों को सांत्वना पुरस्कार दिए गए। शिक्षकों ने कार्यक्रम को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

## ज्ञानशाला प्रशिक्षक परीक्षा आयोजित

पीलीबंगा। साध्वी सुदर्शनाश्रीजी के सान्निध्य में जैन भवन में ज्ञानशाला प्रशिक्षक परीक्षा आयोजित हुई। तेरापंथ सभा पीलीबंगा के निर्देशन में सभा अध्यक्ष मालचंद पुगलिया, पीलीबंगा परीक्षा केंद्र व्यवस्थापक ओम पुगलिया, महिला मंडल मंत्री सुशीला नाहटा एवं अन्य पदाधिकारियों की उपस्थिति में केंद्र द्वारा प्राप्त प्रश्न पत्र वितरित किये गए। बारह परीक्षार्थियों ने इस परीक्षा में भाग लिया। हनुमानगढ़ से भी दो परीक्षार्थी सम्मिलित हुए। सभी परीक्षार्थियों ने साध्वीश्री से मंगल पाठ का श्रवण कर जैन विज्ञ की परीक्षा दी। पहली बार आयोजित ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं की परीक्षा सानंद हुई।

## स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन

राजाजीनगर। तेरापंथ युवक परिषद् राजाजीनगर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर एंड डेंटल केयर श्रीरामपुरम के अंतर्गत विश्व हृदय दिवस के उपलक्ष में रियायती दर पर हृदय संबंधित जांच शिविर का समायोजन किया गया। शिविर की शुरुआत सामूहिक नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुई। शिविर में हृदय से सम्बंधित 23 प्रकार की जांच समाविष्ट की गई जिसमें कुल 38 सदस्यों ने लाभ लिया। इस अवसर पर तेयुप अध्यक्ष कमलेश चौरडिया, राजेश देरासरिया, मुकेश नाहर एवं मोहन चौरडिया ने अपनी सेवाएं प्रदान की।

## रक्तदान कार्यों हेतु सम्मान

कटक। नेशनल वॉलंटरी ब्लड डोनेशन डे के अवसर पर स्थानीय सेंट्रल रेड क्रॉस ब्लड बैंक, कटक द्वारा तेरापंथ युवक परिषद्, कटक को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में कटक के कलेक्टर दत्तात्रेय शिंदे, कटक बीजेपी विधायक प्रकाश कुमार सेठी, कटक बीजेपी अध्यक्ष बडू भाई, ब्लड बैंक अवेयरनेस कमिटी के चेयरमैन रंजन बिस्वाल, सेंट्रल रेड क्रॉस ब्लड बैंक की डायरेक्टर डॉ. चंद्रिका दास, डॉ. रघुनाथ बेउरा, डॉ. कनकलता डेय, और कोऑर्डिनेटर अविनाश दास विशेष रूप से उपस्थित थे। उन्होंने परिषद् को मोमेंटो, सर्टिफिकेट आदि देकर सम्मानित किया। परिषद् के अध्यक्ष विकास नौलखा, मंत्री चिराग सिंघी, और ब्लड प्रभारी अरिहंत चौरडिया ने परिषद् की ओर से यह सम्मान ग्रहण किया।

सेंट्रल रेड क्रॉस टीम ने तेयुप कटक की प्रशंसा करते हुए कहा कि जब भी ब्लड की कमी होती है, परिषद् रक्तदान शिविर आयोजित करने का हर संभव प्रयास करती है।

# सप्त दिवसीय कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग (CPS) कार्यशाला का दीक्षांत समारोह

हैदराबाद।

अभातेयुप के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद्, हैदराबाद द्वारा आयोजित सप्त दिवसीय कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग (CPS) कार्यशाला का दीक्षांत समारोह अभातेयुप राष्ट्रीय उपाध्यक्ष - 'द्वितीय' जयेश मेहता की अध्यक्षता में जैन तेरापंथ भवन, डी. वी. कॉलोनी, हैदराबाद में आयोजित हुआ।

मुख्य अतिथि मनोज दुगड़ (मैनेजिंग ट्रस्टी, जैन वेलफेयर ट्रस्ट), विशिष्ट अतिथि उमेश बागरेचा (समाज सेवी), सरिता बैद (संपादक, हिंदी मिलाप) के साथ संघीय संस्थाओं के पदाधिकारी की गरिमामय उपस्थिति रही।

अभातेयुप से सीपीएस प्रशिक्षक के रूप में डिंपल जैन, संगीता गन्ना, दिनेश बुरड़ ने अलग-अलग दिनों

में प्रशिक्षण प्रदान किया। साध्वी शिवमालजी की सहवर्ती साध्वी अमितरेखाजी के मंगल मंत्रोच्चार के साथ कार्यक्रम की शुरुआत हुई।

तेयुप हैदराबाद अध्यक्ष अभिनंदन नाहटा द्वारा सभी का स्वागत करते हुए मंगलकामना संप्रेषित की गई। राष्ट्रीय उपाध्यक्ष जयेश मेहता ने आशु कविताओं के माध्यम से सभी प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन किया।

मुख्य अतिथि मनोज दुगड़ ने अपनी जीवनयात्रा के माध्यम से स्वप्न और संकल्प सिद्धि के सूत्र बताये। विशिष्ट अतिथि सरिता बैद ने अपने जीवन संस्मरण के माध्यम से परिवार का महत्व और पत्रकारिता का समाज में सकारात्मक प्रभाव की बात बताई।

मुख्य प्रशिक्षक दिनेश बुरड़ ने सभी संभागियों को मंच पर अभिव्यक्ति के विभिन्न गुर सिखाये। इससे पूर्व भिक्षु

प्रज्ञा मंडली से प्रवीण श्यामसुखा और प्रकाश दुगड़ ने विजय गीत का संगान किया एवं श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन मनोज दुगड़ ने किया। सीपीएस कार्यशाला के 30 सम्भागियों ने विभिन्न विषयों पर अपनी प्रस्तुति दी।

तेयुप हैदराबाद द्वारा अभातेयुप राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, अभातेयुप परिवार, ट्रेनर्स का सम्मान करते हुए सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र से सम्मानित किया गया। कार्यशाला के सुव्यवस्थित आयोजन में संयोजक गौरव भूतोडिया और प्रतीक बम्बोली के साथ जौनल ट्रेनर्स खुशाल भंसाली एवं प्रांजल दुगड़ का अथक परिश्रम नियोजित रहा।

सप्तदिवसीय व्यवस्थाओं में आलोक नाहटा, किशोर मंडल प्रभारी अरिहंत दुगड़, संयोजक ऋषभ चिंडलिया सहित कई युवा एवं किशोर कार्यकर्ताओं का विशेष श्रम रहा।

## गुरु दर्शन “कृतज्ञोस्मि यात्रा” का आयोजन

साउथ हावड़ा।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी के सुशिष्य मुनि जिनेश कुमार जी की प्रेरणा से संघबद्ध गुरु दर्शन यात्रा का सफल आयोजन किया गया।

यात्रा में लगभग 190 भाई-बहनों ने भाग लिया। सूरत पहुंचकर संघ ने आचार्यश्री महाश्रमणजी, साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी,

मुख्यमुनि महावीर कुमार जी, साध्वीवर्या संबुद्धयशा जी एवं अन्य चारित्रात्माओं के सेवा-दर्शन का लाभ लिया गया।

आचार्य श्री की सन्निधि में संघ की सामूहिक सेवा के अवसर पर सभा अध्यक्ष लक्ष्मीपत बाफना ने साउथ हावड़ा चातुर्मास और क्षेत्र की गतिविधियों की जानकारी प्रस्तुत की। सभा के मंत्री बसन्त पटावरी

ने संयोजन का कार्य संभाला। गुरुदेव ने ज्ञानाराधना को बढ़ावा देने की प्रेरणा दी।

यात्रा के सफल आयोजन में पांचों संयोजक प्रकाश बैद, प्रदीप पुगलिया, राजेन्द्र चोपड़ा, सुरेश घीया, दीपक नखत एवं कार्यकर्ताओं का अथक श्रम रहा साथ ही आर्थिक अनुदानदाताओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

## आत्म कल्याण के निमित्त होनी चाहिए तपस्या

रायपुर।

मुनि सुधाकर कुमार जी की प्रेरणा से छठे मासखमण की तपस्या का प्रत्याख्यान व अभिनंदन समारोह श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, रायपुर द्वारा आयोजित किया गया।

मंगलाचरण तेरापंथ महिला मंडल, रायपुर व संचालन सूर्य प्रकाश बैद द्वारा किया गया। अभिनंदन समारोह में सभा, तेममं, तेयुप के अध्यक्षों व टीपीएफ मंत्री एवं पारिवारिक जन ने अपनी-अपनी भावनाएं व्यक्त करते हुए तपस्या का अनुमोदन किया। मुनि

सुधाकर जी ने तपस्वी अभिलेख कटारिया की तपस्या की अनुमोदन करते हुए उनके आध्यात्मिक जीवन हेतु मंगलकामना की।

मुनिश्री ने उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं को प्रेरित करते हुए कहा कि तपस्या आत्मकल्याण के निमित्त होनी चाहिए न कि बाह्य आडम्बर के हेतु। ज्ञान, दर्शन, चारित्र का जितना महत्व हमारे जीवन में होता है उतना ही तप का भी होता है।

मुनिश्री ने आगे कहा कि तपस्या क्यों करनी यह विशेष ध्यान रखना चाहिए। तपस्या तो केवल अपनी आत्मा के

कल्याण हेतु अन्य भावनाओं को गौण करते हुए करनी चाहिए। तपस्यारत तपस्वी को यह भावना रखनी चाहिए कि मैं तो निमित्त मात्र हूँ, तपस्या तो देव-गुरु-धर्म के प्रताप अर्थात् पुण्य के उदय से हो रही है।

तपस्या समता भाव, संयम अनुपालना व जगत के सभी प्राणीमात्र के प्रति प्रेम भाव के साथ करनी चाहिए। तपस्या त्याग की भावना से करनी चाहिए न कि कामना की भावना से। अभिनंदन समारोह में विशेष रूप से दुर्ग से पधारें मासखमण तपस्वी पूनम संचेती भी उपस्थित थे।

## अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के अन्तर्गत विभिन्न आयोजन

### भायंदर

साध्वी पुण्ययशा जी के सान्निध्य में सांप्रदायिक सौहार्द दिवस तुलसी समवसरण तेरापंथ भवन में मनाया गया। मंगलाचरण अणुव्रत समिति एवं तेयुप कार्यकर्ताओं द्वारा अणुव्रत गीत से किया गया। साध्वी वर्धमानयशा जी सांप्रदायिक सौहार्द भाव पर सुमधुर गीतिका प्रस्तुत की। साध्वी बोधिप्रभा जी ने कहानी के माध्यम से आज के दिवस पर प्रकाश डाला। भायंदर क्षेत्रीय अणुव्रत संयोजक भूपेंद्र वागरेचा ने अपने वक्तव्य के द्वारा सभी का स्वागत किया एवं अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह की जानकारी दी। सभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष विजय बोकडिया ने अपने विचार प्रस्तुत किये। वसई से समागत करुणा कोठारी ने अणुव्रत के बारे में जानकारी प्रेषित की। ब्यावर से समागत शक्ति, सलोनी भटेवरा ने काव्य पाठ के द्वारा विषय पर अपनी अभिव्यक्ति दी।

### जसोल

मुनि यशवंतकुमार जी के सान्निध्य में स्थानीय पुराना ओसवाल भवन, जसोल में अणुव्रत समिति जसोल के तत्वावधान में अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का पहला दिवस साम्प्रदायिक सौहार्द दिवस के रूप में मनाया गया। मुनिश्री ने नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम का शुभारंभ किया। मंगलाचरण डूंगरचंद बागरेचा ने किया, और स्वागत भाषण अणुव्रत समिति के अध्यक्ष पारसमल गोलेच्छा ने दिया। अणुव्रत आचार संहिता का वाचन तेरापंथ सभा के अध्यक्ष भूपतराज कोठारी ने किया। अणुव्रत समिति प्रभारी लीला सालेचा ने अपने विचार व्यक्त किए।

मुनि यशवंतकुमार जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि साम्प्रदायिक सौहार्द मानवता का गुण है। यह भाव बैर, शत्रुता, दुर्व्यवहार और दुर्भाव को दूर करता है और मानव में श्रेष्ठ गुणों का विकास करता है। धर्म हमें आपस में बैर रखना या घृणा की सीख नहीं देता, बल्कि मैत्री भाव, सद्भाव और प्रेम में सहायक होता है। आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन के माध्यम से एक ऐसे व्यावहारिक धर्म की रचना की, जिसमें हर व्यक्ति प्रेम, सद्भाव और मैत्री के साथ रहकर स्वस्थ समाज की रचना कर सकता है। मुनि मोक्षकुमार जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि आचार्य तुलसी ने कहा था - आत्मशुद्धि का साधन ही धर्म है। अणुव्रत के नियमों का पालन करने से विश्व में शांति स्थापित हो सकती है। सेंट पॉल फादर रोनाल्ड रोबो ने कहा

कि पूरा विश्व एक परिवार है। अगर हम एक-दूसरे को भाई-भाई मानकर चलें, तो हमारे बीच कोई हिंसा नहीं रहेगी। धर्म के नाम पर हो रहे संघर्षों के पीछे सभी अपने-अपने अहंकार लेकर चलते हैं, और यदि ऐसा ही चलता रहा तो एक दिन मानव जाति का संहार हो जाएगा। मौलाना शौकत अली अकबर ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि धर्म केवल एक है, और वह है मानव धर्म। हम सभी संप्रदायों को एक मानें और उनमें से सभी अच्छी बातों को स्वीकार करें और बुराइयों को दूर करें। कौशलगिरी महाराज ने कहा कि मानव जाति के लिए आपसी सौहार्द और सद्भाव अत्यंत आवश्यक हैं। आज सभी साम्प्रदायिकता के अर्थ से परिचित हैं। ज्ञानशाला प्रभारी डूंगरचंद सालेचा ने आभार व्यक्त किया। संचालन अणुव्रत समिति के मंत्री सफरु खान ने किया। अणुव्रत समिति के पदाधिकारी, कार्यकर्ता सहित गणमान्य लोग उपस्थित थे।

### दिल्ली

अणुव्रत विश्व भारती सोसाइटी द्वारा निर्देशित उद्बोधन सप्ताह के प्रथम दिवस को 'सांप्रदायिक सौहार्द दिवस' के रूप में मनाया गया, जिसका आयोजन अणुव्रत समिति दिल्ली ट्रस्ट ने साध्वी संगीतश्रीजी के सान्निध्य में विवेक विहार के ओसवाल सामुदायिक भवन में किया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से हुई और समिति के सदस्यों ने अणुव्रत गीत की प्रस्तुति दी। साध्वी संगीतश्री जी ने अपने प्रवचन में कहा कि प्रत्येक संप्रदाय में प्रेम और स्नेह का वातावरण बने, मानव पहले मानव बने। उन्होंने आचार्य तुलसी द्वारा प्रतिपादित अणुव्रत आंदोलन की जानकारी दी। दिल्ली समिति के अध्यक्ष मनोज बरमेचा ने सभी धर्मों के प्रतिनिधियों और श्रावक समाज का स्वागत किया। अणुव्रत विश्व भारती सोसाइटी के महामंत्री भिखम चंद सुराणा ने उद्बोधन सप्ताह के प्रथम दिवस की शुभकामनाएँ दी और अणुव्रत के विभिन्न प्रकल्पों की जानकारी प्रदान की। सिख समाज के प्रतिनिधि पद्मश्री जितेंद्र सिंह शंटी ने कहा कि हमें मानव सेवा में सदैव तत्पर रहना चाहिए। आर्य समाज के प्रतिनिधि डॉ. नरेंद्र वेदालंकार ने कहा कि धर्म हमें आपस में बैर करना नहीं सिखाता, बल्कि हमें हर धर्म का सम्मान करना चाहिए। योगा रिसर्च डॉ. गोपाल ने कहा कि भले ही हर धर्म की पूजा पद्धति अलग हो, जीवन जीने की पद्धति ऐसी होनी चाहिए जो इंसान को इंसान बनाए। मुस्लिम समुदाय के

हाफिज जमील रहमान ने कहा कि हमें खुद को किसी एक संप्रदाय तक सीमित नहीं रखना चाहिए, बल्कि वे कार्य करने चाहिए जो इंसानियत का भला करें, जो अणुव्रत सिखाता है। ब्रह्मकुमारी आश्रम की क्षीरा दीदी ने बताया कि हम अपने जीवन को मानवता में लगा कर उसे पवित्र बना सकते हैं। क्रिश्चियन समाज के प्रतिनिधि डॉ. एम.डी. थॉमस ने कहा कि हमें एक-दूसरे के पंथ का सम्मान करना चाहिए और एक-दूसरे के काम आना चाहिए। अणुव्रत से जुड़े वरिष्ठ व्यक्तित्व डॉ. नलिन शास्त्री ने आचार्य श्री तुलसी और अणुव्रत आंदोलन पर अपने विचार साझा किए। उन्होंने कहा कि अणुव्रत जाति, वर्ण, और संप्रदाय से ऊपर उठकर कार्य करता है और न केवल मानवता का संदेश देता है, बल्कि नशामुक्ति और पर्यावरण जागरूकता का भी संदेश देता है। साध्वीवृंद ने सांप्रदायिक सौहार्द पर एक सुंदर गीतिका प्रस्तुत की। शाहदरा सभा के अध्यक्ष राजेंद्र सिंधी और ओसवाल समाज के अध्यक्ष आनंद बुच्चा ने दिल्ली समिति के कार्यों की सराहना की। निवर्तमान अध्यक्ष शांति लाल पटवारी, प्रदीप चोरडिया, वैभव जैन और मोहित शर्मा का महत्वपूर्ण योगदान रहा। आभार ऋषभ बैद ने किया।

### गाजियाबाद

अणुव्रत विश्व भारती के निर्देशानुसार अणुव्रत समिति, गाजियाबाद ने जैन स्थानक सूर्य नगर में, मुनि अरुण चन्द्र जी के सान्निध्य में 'सांप्रदायिक सौहार्द दिवस' का आयोजन किया। अणुविभा के महामंत्री भीखमचंद सुराणा, अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह की राष्ट्रीय संयोजिका डॉ. कुसुम लूनिया, कृष्ण मोहन खेमका (निगम पार्षद सूर्यनगर और अणुव्रत समिति गाजियाबाद के संरक्षक) तथा जैन स्थानक के प्रधान महामंत्री सहित अन्य कई संस्थाओं के पदाधिकारी भी कार्यक्रम में शामिल हुए। कार्यक्रम की शुरुआत नीता शर्मा ने अणुव्रत गीत से की। समिति की अध्यक्षा कुसुम सुराणा ने सभी धर्मगुरुओं और अतिथियों का स्वागत किया। डॉ. कुसुम लूनिया ने अणुव्रत के 11 नियमों की संक्षिप्त और प्रभावी व्याख्या की। अणुविभा के महामंत्री भीखमचंद सुराणा ने अणुव्रत का परिचय देते हुए अपने वक्तव्य में सांप्रदायिक सौहार्द दिवस की महत्ता पर प्रकाश डाला और अणुव्रत की विचारधारा को जन-जन तक पहुंचाने का आह्वान किया। फादर फ्रेड्रि ने अपने विचार साझा किए, जबकि

ज्ञानी गुरविंदर सिंह ने एक कहानी के माध्यम से सांप्रदायिक सौहार्द की महत्ता पर बल दिया। ब्रह्माकुमारी निशा ने कहा कि जैसे हम अन्न का व्रत रखते हैं, वैसे ही हमें मन का व्रत भी रखना चाहिए, जिससे सुख, शांति और पवित्रता प्राप्त हो। अंत में, मुनि अरुण चन्द्र जी ने अपने सारगर्भित विचार व्यक्त किए और कहा, सौहार्द एक बहुत ही सुंदर शब्द है। जीवन यात्रा किसी भी व्यक्ति, समाज या राष्ट्र के सहयोग के बिना नहीं चलती। जैन धर्म एक विचारधारा है, और वह व्यक्ति श्रेष्ठ है जिसका स्वभाव ऊंचा हो। संयम, अहिंसा, अपरिग्रह और अणुव्रत की विचारधारा को अपनाने वाला धर्म, चाहे वह कोई भी हो, महान है। संरक्षक कृष्ण मोहन खेमका ने अपने वक्तव्य में कहा कि गाजियाबाद में विभिन्न धर्म गुरुओं को एक साथ सांप्रदायिक सौहार्द दिवस के अवसर पर देखना अत्यंत सुखद अनुभव है। संचालन शरद वाण्ये ने किया।

### कांदिवली, मुंबई

अणुव्रत विश्व भारती के तत्वावधान में अणुव्रत समिति मुंबई द्वारा अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का पहला दिन साम्प्रदायिक सौहार्द दिवस के रूप में तेरापंथ भवन कांदिवली में मनाया गया। मंगलाचरण पुष्पा, डिम्पल, शिल्पू जैन ने किया। अणुव्रत आचार संहिता का वाचन वरिष्ठ प्रेक्षा प्रशिक्षक पारस दुगड़ ने किया। अणुव्रत समिति मुंबई अध्यक्ष रोशन मेहता ने उपस्थित सभी का स्वागत किया। बौद्ध धर्म के भदंत राहुल बोधि महाथैरो, ईसाई धर्म के फादर माईकल रोझरियो, रामकृष्ण मिशन के स्वामी दयाधिपानंद ने अपने अमूल्य विचार रखे। आचार्य श्री महाश्रमण जी की शिष्या साध्वी डॉ. मंगलप्रज्ञा जी की सहवर्ती साध्वी डॉ. राजुलप्रभाजी ने अपने वक्तव्य से सभी को लाभान्वित किया एवं पूज्य गुरुदेव द्वारा प्रदत्त अणुव्रत की महत्ता बताकर अणुव्रत को जीवन में उतारने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम में तेरापंथ सभा के अभूतपूर्व अध्यक्ष ख्यालीलाल तातेड़, मनोहर गोखरू, पूर्व पदाधिकारी, कांदिवली सभा अध्यक्ष ज्ञान भंडारी, तेयुप कांदिवली अध्यक्ष राकेश जैन, बोरिवली सभा अध्यक्ष संगीता सिंधी, कांदिवली महिला मंडल अध्यक्षा विभा जैन एवं कई गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही। आभार ज्ञापन मंत्री राजेश चौधरी ने किया। कार्यक्रम का सफल संचालन सांप्रदायिक सौहार्द समिति के राष्ट्रीय संयोजक राजकुमार चपलोट ने किया।

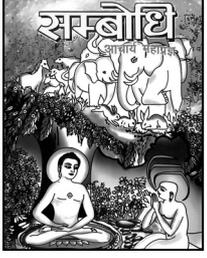
### पीलीबंगा

अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के दूसरे दिन अहिंसा दिवस का आयोजन स्थानीय राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय में किया गया। प्रीति डाकलिया ने अपनी सुमधुर आवाज में अणुव्रत के नियमों पर आधारित गीतिका को मंगलाचरण के रूप में प्रस्तुत किया। इसके बाद प्रेक्षावाहिनी संवाहक एवं तेरापंथी सभा के संगठन मंत्री ओम पुगलिया ने साध्वी प्रगतिप्रभा जी और साध्वी प्रगतिप्रभा जी का परिचय दिया। साध्वी प्रगतिप्रभा जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि आज उन्हें अपने पुराने विद्यालय में आने का सौभाग्य मिला है, जहाँ से उन्होंने शिक्षा प्राप्त की थी। उन्होंने अहिंसा दिवस के अवसर पर कहा कि अहिंसा का विकास सर्वप्रथम अपने भीतर से दूसरों के प्रति संवेदना और सहिष्णुता से होता है। साध्वी प्रगतिप्रभा जी ने भी अपने विद्यालय के दिनों और गुरुजनों को याद करते हुए अहिंसा दिवस पर अपने विचार साझा किए। प्रधानाध्यापिका सीमा झांब ने अपनी प्रसन्नता व्यक्त की। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष सूरज प्रकाश ने आज के कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए विद्यालय की छात्राओं, शिक्षकों और शिक्षिकाओं का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन महिला मंडल की मंत्री एवं अणुव्रत समिति की सदस्या सुशीला नाहटा ने किया। अणुव्रत समिति के संरक्षक विजयराज दूगड़, तेरापंथ सभा के मंत्री प्रकाश डाकलिया, तेयुप मंत्री रूपेश सुराणा, महिला मंडल से संगीता डाकलिया, मधु पुगलिया उपस्थित थे।

### पश्चिम, अहमदाबाद

साध्वी मधुस्मिता जी के सान्निध्य और साध्वी काव्यलताजी के निर्देशन में अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के अंतर्गत अहिंसा दिवस का आयोजन किया गया। साध्वीश्री ने कहा कि अहिंसा का अर्थ है मन, वचन और काया से हिंसा न करना। मन में किसी भी जीव के प्रति हिंसा का भाव नहीं आना चाहिए, वचन से किसी का मन नहीं दुखाना चाहिए, क्योंकि वचन से दिया गया घाव भरना कठिन होता है। संकल्पपूर्वक किसी जीव की हिंसा न करें। परम पूज्य गुरुदेव अहिंसा के पुजारी और परम साधक हैं। हम अपने घर में शांति और सहिष्णुता का वातावरण बनाएं, तभी अहिंसा की साधना संभव हो सकती है। मोटेरा से समागत लक्ष्मीपत बोथरा ने अपने विचार व्यक्त किए।

## संबोधि



## गृहिधर्मचर्या

सम्यक्त्व का शरीर सहज, सुन्दर होता है। जिसे वह प्राप्त है उसकी सुगंध स्वतः ही प्रस्फुटित होती है। उसका जीवन स्वयं ही एक पाठ है। वह जो कुछ करता है समभाव से भिन्न नहीं करता, दिखावा नहीं करता। जिसका होना ही धर्म को अभिव्यक्त करता है, उसका व्यवहार, आचरण भीतर से स्फूर्त होता है। कथनी और करनी में वैमनस्य का दर्शन नहीं होता। स्वभाव का स्वाद जिसने चख लिया है, वह फिर उससे भिन्न जी नहीं सकता। जो केवल बाहर से सम्यक्त्व का चोला पहन लेते हैं, उनका जीवन इनसे मेल नहीं खाता। वे अपने स्वार्थ के लिए अन्यथा आचरण कर धर्म को भी दूषित कर देते हैं। सम्यक्त्व के ये भूषण उसके शरीर की आभा को और प्रस्फुटित कर देते हैं। सौम्यता, सौहार्द, करुणा, निश्चलता और सत्यपूर्ण व्यवहार धर्म की शोभा में चार चांद लगा देते हैं।

६. भारवाही यथाश्वासान्, भाराक्रान्तेऽश्नुते यथा।  
तथारम्भभराक्रान्त, आश्वासान् श्रावकोऽश्नुते ॥

जिस प्रकार भार से लदा हुआ भारवाहक विश्राम लेता है, उसी प्रकार आरंभ-हिंसा के भार से आक्रांत श्रावक विश्राम लेता है।

७. इन्द्रियाणामधीनत्वाद्, वर्ततेऽवद्यकर्मणि।  
तथापि मानसे खेदं, ज्ञानित्वाद् वहते चिरम् ॥

इन्द्रियों के अधीन होने के कारण वह पापकर्म-हिंसात्मक क्रिया में प्रवृत्त होता है, फिर भी ज्ञानवान् होने के कारण वह उस कार्य में आनंद नहीं मानता, उदासीन रहता है।

८. आश्वासः प्रथमः सोऽयं, शीलादीन् प्रतिपद्यते।  
सामायिकं करोतीति, द्वितीयः सोऽपि जायते ॥

व्रत आदि स्वीकार करना श्रावक का पहला विश्राम है। सामायिक करना दूसरा विश्राम है।

९. प्रतिपूर्ण पौषधञ्च, तृतीयः स्याच्चतुर्थकः।  
संलेखनां श्रितो यावज्जीवमनशनं सृजेत् ॥

उपवासपूर्वक पौषध करना तीसरा विश्राम है और संलेखनापूर्वक आमरण अनशन करना चौथा विश्राम है।

मकान, धर्मशाला, वृक्ष, नदी तट आदि शारीरिक विश्राम स्थल है। धर्म आत्म-विश्राम का केन्द्र है। गृही जीवन आरंभ-व्यस्त जीवन है। वहां आत्म साधना के लिए अवकाश कम मिलता है।

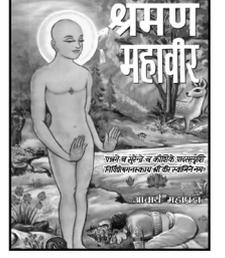
(क्रमशः)

## श्रमण महावीर



-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

## बंधन की मुक्ति : मुक्ति का अनुबंध



भगवान् की जीवन-घटनाओं से ऐसा प्रतीत होता है कि प्रकृति के प्रतिकूल चलना उनका सहज धर्म हो गया। हेमन्त ऋतु में भगवान् छाया में ध्यान करते। गर्मी में वे धूप में ध्यान करते। भगवान् के ये प्रयोग प्रकृति पर पुरुष की विजय के प्रतीक बन गए।

भगवान् श्रावस्ती से विहार कर हलेदुक गांव के बाहर पहुंचे। वहां हलेदुक नामक एक विशाल वृक्ष था। भगवान् उसके नीचे ध्यानमुद्रा में खड़े हो गए। एक सार्थवाह श्रावस्ती जा रहा था। उसने उस विशाल वृक्ष के पास पड़ाव डाला।

सूर्य अस्त हो चुका था। रात के चरण आगे बढ़ रहे थे। अन्धकार जैसे-जैसे गहरा हो रहा था, जैसे-जैसे सर्दी का प्रकोप बढ़ रहा था। भगवान् उस सर्दी में निर्वसन खड़े थे। वह वृक्ष ही छत, वही आंगन, वही मकान और वही वस्त्र सब कुछ वही था। सार्थ के लोग सन्यासी नहीं थे। उनके पास संग्रह भी था बिलौने, कंबलें, रजाइयां और भी बहुत कुछ। फिर भी वे खुले आकाश में कांप रहे थे। उन्होंने सर्दी से बचने के लिए आग जलाई। वे रात भर उसका ताप लेते रहे। पिछली रात को वहां से चले। आग को जैसे ही छोड़ गए।

हवा तेज हो गई। आग कुछ आगे बढ़ी। गोशालक भगवान् के साथ था। वह बोला, 'भंते! आग इस ओर आ रही है। हम यहां से चलें। किसी दूसरे स्थान पर जाकर ठहर जाएं।' भगवान् ध्यान में खड़े रहे। आग बहुत निकट आ गई। गोशालक वहां से दूर चला गया। वृक्ष के नीचे बहुत घास नहीं थी। जो थी, वह सूखी नहीं थी। इसलिए वृक्ष के नीचे आते-आते आग का वेग कम हो गया। उसकी धीमी आंच में भगवान् के पैर झुलस गए।

भगवान् स्वतंत्रता के विविध प्रयोग कर रहे थे। वे प्रकृति के वातावरण की परतंत्रता से भी मुक्त होना चाहते थे। सर्दी और गर्मी दोनों सब पर अपना प्रभाव डालती है। भगवान् इनके प्रभाव क्षेत्र में रहना नहीं चाहते थे।

शिशिर का समय था। सर्दी बहुत तेज पड़ रही थी। बर्फीली हवा चल रही थी। कुछ भिक्षु सर्दी से बचने के लिए अगार-शकटिका के पास बैठे रहे। कुछ भिक्षु कंबलों और ऊनी वस्त्रों की याचना करने लगे। पार्श्वनाथ के शिष्य भी वातायन-रहित मकानों की खोज में लग गए। उस प्रकंपित करने वाली सर्दी में भी भगवान् ने छप्पर में स्थित होकर ध्यान किया। प्रकृति उन पर प्रहार कर रही थी और वे प्रकृति के प्रहार को अस्वीकार कर रहे थे। इस द्वन्द्व में वे प्रकृति से पराजित नहीं हुए।

## भेद-विज्ञान का ध्यान

मकान पर दृष्टि आरोपित हुई तब लगा कि आकाश बंधा हुआ है। उसके स्वभाव की भाषा पढ़ी तब ज्ञात हुआ कि वह मकान से बद्ध नहीं है।

जल में डूबे हुए कमलपत्र को देखा तब लगा कि वह जल से स्पृष्ट है। उसके स्वभाव की भाषा पढ़ी तब ज्ञात हुआ कि वह जल से स्पृष्ट नहीं है।

घट, शराव, ढक्कन आदि को देखा तब लगा कि ये मिट्टी से भिन्न हैं। मिट्टी के स्वभाव की भाषा पढ़ी तब ज्ञात हुआ कि ये मिट्टी से भिन्न नहीं हैं।

तरंगित समुद्र में ज्वार-भाटा देखा तब लगा कि वह अनियत है। उसके स्वभाव की भाषा पढ़ी तब ज्ञात हुआ कि वह अनियत नहीं है।

सोने को चिकने और पीले रूप में देखा तब लगा कि वह विशिष्ट है। उसके स्वभाव की भाषा पढ़ी तब ज्ञात हुआ कि वह अविशेष है।

अग्नि से उत्पन्न जल को देखा तब लगा कि वह उष्णता से संयुक्त है। उसके स्वभाव की भाषा पढ़ी तब ज्ञात हुआ कि वह उष्णता से संयुक्त नहीं है।

स्वभाव से भिन्न अनुभूति में लगा कि आत्मा बद्ध-स्पृष्ट, अन्य, अनियत, विशेष और संयुक्त है। स्वभाव की भाषा पढ़ी तब ज्ञात हुआ कि वह अबद्ध-अस्पृष्ट, अनन्य, ध्रुव, अविशेष और असंयुक्त है।

(क्रमशः)

## जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ की तपस्वी साध्वियां

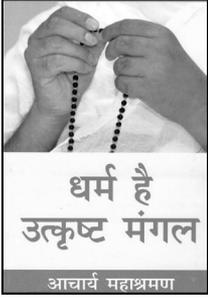
## आचार्य भिक्षु युग

## साध्वीश्री तेजूजी (ढोलकम्बोल) दीक्षा क्रमांक 25

साध्वीश्री ने अपने जीवन में अनेक तपस्याएं की। पर उसका उल्लेख प्राप्त नहीं है। मुनि जीवो जी द्वारा रचित तपस्वी साधु-साध्वी वर्णन ढाल में आया है - तेजूजी तपसण, बयालीस दिन संधारो। अन्तिम समय में उन्होंने 42 दिन का अनशन कर अपनी जीवन यात्रा को सम्पन्न किया।

- साभारः शासन समुद्र -

## धर्म है उत्कृष्ट मंगल



-आचार्यश्री महाश्रमण  
सत्यं ब्रूयात् प्रियं  
ब्रूयात्



अठारह पापों में दूसरा पाप है- मृषावाद। श्रीमज्जयाचार्य द्वारा संरचित 'झीणी चर्चा' में यह स्पष्ट किया गया है कि जिस पूर्वबद्ध कर्म के उदय से व्यक्ति झूठ बोलता है वह मृषावाद पापस्थान है। झूठ बोलना मृषावाद क्रिया अथवा मृषावाद आश्रव है और मृषा बोलने से जो पाप कर्म का बन्ध होता है वह मृषावाद पाप है।

'दसवेअलियं' सूत्र में मृषा के चार कारण बतलाए गए हैं क्रोध, लोभ, भय और हास्य। इन चार भावों के कारण व्यक्ति मृषावाद का प्रयोग करता है। सलक्ष्य मृषावाद के ये चार कारण बन जाते हैं। इसके अतिरिक्त कभी-कभी अज्ञानतावश या प्रमादवश भी मृषावाद का प्रयोग हो जाता है। कहना कुछ चाहिए था और व्यक्ति भूल अथवा जल्दबाजी के कारण अनचाहे ही कुछ अन्यथा कह डालता है। जैसे अहिंसा महाव्रत में तीन करण और तीन योग से हिंसा का प्रत्याख्यान होता है। वैसे ही सत्य महाव्रत में तीन करण और तीन योग से मृषावाद का प्रत्याख्यान होता है। चार कारणों में से प्रत्येक के साथ तीन करण और तीन योग को जोड़ने से नौ-नौ भंग बन जाते हैं।  $4 \times 3 = 12$  भंग सत्य महाव्रत के बन जाते हैं। सत्य की महिमा में यहां तक कहा गया है-

साच बरोबर तप नहीं, झूठ बरोबर पाप।  
जाके हिरदै साच है ता हिरदै प्रभु आप।।

सत्यभाषा सावद्य और निरवद्य दोनों प्रकार की होती है। सावद्य शब्द का सन्धि विच्छेद इस प्रकार होता है-स+अवद्य। स यानी सहित और अवद्य यानी पाप। पापसहित को सावद्य कहा जाता है। इससे ठीक उल्टा अर्थ निरवद्य का होता है। निर + अवद्य निर यानी रहित, अवद्य यानी पाप। पापरहित को निरवद्य कहा जाता है। इसके लिए 'अनवद्य' शब्द का प्रयोग भी होता है। सत्य में शक्ति होती है। राग-द्वेष कृश हुए बिना सम्यग् सत्यभाषण का व्रत नहीं हो सकता।

नदी के किनारे पर एक स्कूल था। उसमें पांच सौ विद्यार्थी पढ़ते थे। उससे सटा हुआ था एक राजमहल। उसके पीछे की ओर था एक बगीचा। उसमें आम के पेड़ थे। एक दिन कुछ बच्चे खेलने के लिए बगीचे में गए। उन बच्चों में चौथी कक्षा का विद्यार्थी शशी भी था। वह बहुत होशियार और सच्चाई में विश्वास रखने वाला था। उसने पके हुए आमों को हवा में हिलोरें खाते देखा। उसका मन ललचा गया। उसने एक पत्थर उठाया और आम के पेड़ की ओर फेंका। उसने पत्थर को इतनी तेजी के साथ फेंका कि वह सीधा राजमहल में चला गया। अपने आवास-स्थल पर पत्थर का गिरना राजा को बहुत अखरा। उसने पता लगाने के लिए दो सिपाहियों को भेजा। उन्हें आते देखकर सारे बच्चे नौ दो ग्यारह हो गए। शशी शान्त-मुद्रा में वहीं खड़ा रहा। सिपाही उस के पास आए और उससे पूछा-बच्चे! अभी पत्थर किसने फेंका था?

शशी- साहब! मैंने ही फेंका था।

सिपाही- चलो, तुम्हें राजा साहब बुला रहे हैं। वे तुम्हें पूछेंगे कि पत्थर किसने फेंका। तब तुम क्या जवाब दोगे?

शशी- मैं कहूंगा कि मैंने फेंका था।

सिपाही- सच बोलोगे तो राजा तुम्हें दण्ड देंगे।

शशी- देंगे तो दे देंगे। गलती होने पर, वे दण्ड नहीं देंगे तो कौन देगा?

सिपाही- आज सच्चाई का जमाना नहीं है। तुम कह देना कि पत्थर फेंकने वाला लड़का भाग गया। तुम बच जाओगे।

यह बात शशी को बहुत बुरी लगी। ये सिपाही मुझे झूठ बोलना सिखा रहे हैं, पर मैं कभी झूठ नहीं बोलूंगा।

सिपाहियों ने शशी को राजा के सामने खड़ा कर दिया। राजा ने पूछा- पत्थर किसने फेंका? शशी ने सारी बात सच-सच राजा को बता दी। उसकी सच्चाई से राजा गद्गद् हो गया। राजा ने उसे अपनी गोद में लिया और प्यार के साथ पूछा-तुम सच कैसे बोले? क्या तुम्हें डर नहीं लगा? यह सत्यवादिता तुमने कहां से सीखी?

शशी- राजन्! मेरी मां ने मुझे सीख दी थी 'बेटा! सत्य का फल सदा अच्छा होता है इसलिए सदा सच बोलो।' मैं अपनी मां की सीख को सदा याद रखता हूँ। शशी की सच्चाई ने राजा का मन मोह लिया। उसके कोई पुत्र नहीं था। उसने शशी को युवराज बनाने का निश्चय कर लिया। झूठ की सीख देने वाले उन सिपाहियों ने सशर्म एक दिन देखा- आज राजा ने शशी को अपना युवराज घोषित कर दिया है।

(क्रमशः)

## संघीय समाचारों का मुखपत्र

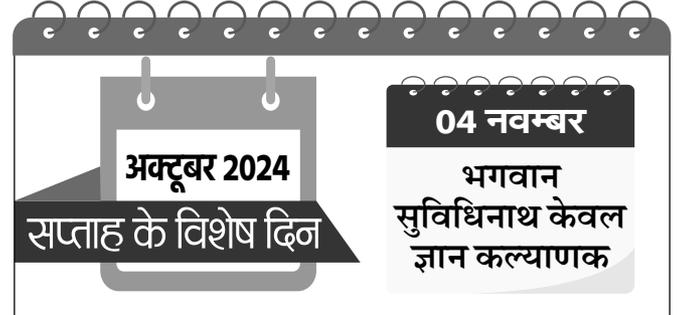
अखिल भारतीय  
तेरापंथ टाइम्स



तेरापंथ टाइम्स की प्रति पाने के लिए क्यूआर कोड स्कैन करें या आवेदन करें  
<https://abtyp.org/prakashan>

समाचार प्रकाशन हेतु ई-मेल करें  
[abtyppt@gmail.com](mailto:abtyppt@gmail.com)

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्



जैन श्रेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्यश्री रायचन्दजी युग

मुनिश्री दीपचंदजी (धोईदा) दीक्षा क्रमांक 149

मुनिश्री उग्र तपस्वी थे। आपने उपवास, बेले, तेले, चोले, पंचोले तो अनेक बार किये। ऊपर के थोकड़ों की तालिका इस प्रकार है- 6/2, 8/5, 9/3, 10/2, 11/1, 12/1, 13/1, 15/1, 18/1, 21/1, 31/5, 36/9, 61/1, 81/1, 95/1।

- साभार: शासन समुद्र -



## अभातेयुप निर्देशित VISION FOR VISIONLESS के अंतर्गत शाखा परिषदों द्वारा विविध कार्यक्रम

### मुंबई, कांदिवली

तेयुप कांदिवली द्वारा नेत्रदान जागरूकता रैली का सफल आयोजन किया। रैली का शुभारंभ ठाकुर विलेज कांदिवली से नमस्कार महामंत्र के साथ तेरापंथ समाज कांदिवली के श्रावक-श्राविकाओं ने किया। रैली में स्थानीय नगर सेविका सुनीता यादव, नगरसेवक ठाकुर सागर सिंह, मागाठाणे विधानसभा संयोजक अविनाश राय, सचिन केलकर व नेत्रदान क्षेत्रीय प्रभारी पैलेश मेहता की गरिमामयी उपस्थिति रही। नेत्रदान-महादान के नारों की गूंज के साथ रैली ठाकुर कॉलेज, ठाकुर कॉम्प्लेक्स होते हुए तेरापंथ भवन पहुँची। साध्वी डॉ. मंगलप्रज्ञा जी ने नेत्रदान को विशिष्ट सामाजिक दान बताया। तेयुप अध्यक्ष राकेश सिंघवी ने रैली के सफल आयोजन के लिये रौनक कोठारी एवं

सर्वाधिक संकल्प पत्र भरवाने हेतु कपिल चंडालिया को धन्यवाद दिया। मुंबई सभाध्यक्ष माणक धोंग, श्री तुलसी महाप्रज्ञ फाउंडेशन अध्यक्ष मेघराज धाकड़, अभातेयुप सहमंत्री भूपेश कोठारी एवं पदाधिकारियों ने नेत्रदान प्रकल्प के प्रायोजक सुन्दर देवी, नवरतनमल, जितेन्द्र, ऋषभ सेठिया एवं अतिथियों का सम्मान किया। तेयुप मंत्री पंकज कच्छारा ने सभी का आभार ज्ञापन किया।

### इचलकरंजी

तेरापंथ युवक परिषद, इचलकरंजी द्वारा नेत्रदान जागरूकता अभियान रैली तेरापंथ भवन से प्रारम्भ होकर शहर के मुख्य मार्गों से होते हुए पुनः तेरापंथ भवन पहुँची। 'शासनश्री' साध्वी कंचनप्रभा जी आदि ठाणा 5 के नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के साथ रैली का शुभारंभ

हुआ। रैली का मुख्य उद्देश्य जन-जन में नेत्रदान के प्रति जागरूकता फैलाकर दृष्टि विहीन व्यक्तियों को रोशनी पाने में सहायक बनने के लिए प्रेरित करना था। आरटीओ ऑफिस के ऑफिसर एवं इचलकरंजी अणुव्रत समिति के अध्यक्ष पंकज जोगड़ पूरी रैली में युवाओं के साथ चले। तेयुप अध्यक्ष अनिल छाजेड़ ने रैली में पधारे हुए गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत व अभिनंदन करते हुए इस नेत्रदान अभियान में ज्यादा से ज्यादा जुड़ने की कामना की। रैली में तेयुप पदाधिकारी, कार्यसमिति सदस्य, युवा साथी व समाज के गणमान्य व्यक्तियों की अच्छी संख्या में उपस्थिति रही। मंत्री अंकुश बाफना ने पधारे हुए सभी सदस्यों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

### साउथ कोलकाता

अभातेयुप के गौरवशाली 60

वर्ष पूर्ण होने पर Vision for Visionless जागरूकता अभियान के रूप में रैली का आयोजन रेस कोर्स से लेकर धनो-धान्यो स्टेडियम तक किया गया। लगभग 50 लोगों ने रैली में भाग लिया जिसका उद्देश्य नेत्रदान के महत्व को समाज में व्यापक रूप से प्रचारित करना था। रैली में तेयुप कोलकाता के अध्यक्ष मोहित बैद, निर्वतमान अध्यक्ष राकेश नाहटा, कोलकाता साउथ सभा के अध्यक्ष बिनोद चोरडिया और मंत्री कमल कोचर, पदाधिकारी आदि का सहयोग रहा।

### गाँधीनगर, दिल्ली

तेयुप एवं तेरापंथ किशोर मंडल, गाँधीनगर-दिल्ली द्वारा नेत्रदान जागरूकता अभियान रैली का आयोजन क्षेत्र के मुख्य मार्गों में किया गया जो तेरापंथ भवन विकास मंच पहुँच कर

संपन्न हुई। लगभग 1.5 किमी की रैली में कृष्णानगर क्षेत्र के निगम पार्श्व संदीप कपूर युवकों के साथ चले। उन्होंने इस रैली व इस आयाम की सराहना करते हुए सभी को इस अभियान से जुड़ने व संकल्प पत्र भरने की प्रेरणा दी। अध्यक्ष अशोक सिंघी ने रैली में पधारे हुए सभी गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया। नेत्रदान प्रभारी हेमराज राखेचा ने आभार ज्ञापन किया। रैली को सफल बनाने में संयोजक अंकित सुराणा, ऋषभ बैद, ऋषभ सेठिया एवं युवा कार्यकर्ताओं का विशेष श्रम रहा। रैली में विकास मंच अध्यक्ष दीपचंद सुराणा, अभातेयुप प्रवृत्ति सलाहकार जतन श्यामशुखा, तेयुप परामर्शक संजय कोटेचा, तेयुप पदाधिकारी, किशोर मंडल संयोजक हिमांशु पुगलिया, तेयुप के युवा साथियों व समाज के गणमान्य व्यक्तियों की अच्छी संख्या में उपस्थिति रही।

## अभातेयुप निर्देशित मंथन 'कल-आज और कल' के विभिन्न आयोजन

### साउथ, कोलकाता

तेरापंथ युवक परिषद् साउथ कोलकाता द्वारा मंथन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से हुई। सर्वप्रथम सभी पूर्व अध्यक्ष एवं मंत्री का सम्मान तेयुप साउथ कोलकाता के पदाधिकारी गण द्वारा किया गया। संस्थापक अध्यक्ष मनीष सेठिया, पूर्व अध्यक्ष एवं मंत्रीगण ने कार्यक्रम में उपस्थित होकर अपने-अपने विचार रखे। जिसमें मुख्य रूप से संगठन की मजबूती और विस्तार, नये सदस्यों को जोड़ना, पुराने सदस्यों को सक्रिय करना, सभी सामाजिक और धार्मिक कार्यक्रमों को समाज तक पहुँचाना, अभातेयुप द्वारा निर्देशित आयाम एवं कार्यक्रमों को बेहतर से पूर्ण करना आदि विषयों पर चर्चा की गई। परिषद् अध्यक्ष मोहित बैद ने कार्यक्रम में पधारे सभी महानुभावों का स्वागत किया और मंत्री कुलदीप लूनिया ने आभार ज्ञापन किया।

### मण्डिया

साध्वी संयमलताजी के सान्निध्य में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् द्वारा निर्देशित एवं तेरापंथ युवक परिषद् मण्डिया द्वारा आयोजित मंथन कार्यशाला का आयोजन स्थानीय तेरापंथ भवन में हुआ। मंगलाचरण तेयुप अध्यक्ष कमलेश गोखरू ने गीतिका द्वारा किया। साध्वीश्री

ने तेयुप मण्डिया को मिलजुल कर कार्य करने की प्रेरणा दी और कहा सभी पूर्व अध्यक्षों से अनुभव लें और सभी से सामंजस्य बना कर रखें। तेयुप मण्डिया के संस्थापक अध्यक्ष पारसमल गुंदेचा ने बताया कि हमें मंथन जैसे आयाम को समय-समय पर करना चाहिये। अनेकों पूर्व अध्यक्षों ने सेवा, संस्कार और संगठन में ओर मजबूती से आगे बढ़ने, नेतृत्व के विकास में चुनौतियाँ, संगठन की वित्तीय योजना, कार्यों की गुणवत्ता पर अपना ध्यान देने, किशोर, युवा एवं समाज के अन्य वर्गों हेतु कार्यक्रमों का आयोजन करने, सदस्यों की सहभागिता सुनिश्चित करने पर अपने विचार व्यक्त किये। मण्डिया तेयुप के वर्तमान अध्यक्ष कमलेश गोखरू ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि मंथन के आयोजन फलस्वरूप सभी पूर्व अध्यक्ष एवं मंत्री के सहयोग से आने वाले समय में तेयुप मण्डिया नव कीर्तिमान स्थापित करते हुए कार्यों को संपादित करेगी। संचालन एवं आभार तेयुप मंत्री प्रदीप भंसाली ने किया।

### पाली

'मंथन' कल, आज और कल का आयोजन तेरापंथ भवन, मंडिया रोड, पाली में किया गया। तेयुप अध्यक्ष विपिन बांठिया ने कार्यक्रम में उपस्थित महासभा सदस्य, अभातेयुप साथी, तेयुप पूर्व अध्यक्ष, पूर्व मंत्री एवं पूर्व कार्यकर्ताओं का स्वागत-

अभिनंदन किया। सभी ने अपने सुझाव दिए एवं अभातेयुप द्वारा निर्देशित कार्य को पूर्ण निष्ठा से करने की तथा संगठन को नई ऊंचाइयों की ओर ले जाने की सलाह दी। आचार्य तुलसी जैन हॉस्टल, आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेन्टर, नशा-मुक्ति आदि के संदर्भ में विचार विमर्श हुआ। कार्यक्रम में पूर्व पदाधिकारियों के साथ वर्तमान प्रबंध मंडल के साथी भी उपस्थित थे। मंत्री पीयूष चोपड़ा ने आभार व्यक्त किया।

### साउथ हावड़ा

अभातेयुप के निर्देशन में 'मंथन (कल, आज और कल)' कार्यक्रम का आयोजन तेरापंथ युवक परिषद् साउथ हावड़ा द्वारा किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से हुई। तेयुप अध्यक्ष गगन दीप बैद ने उपस्थित पूर्व अध्यक्ष, मंत्री, पदाधिकारियों और कार्यसमिति सदस्यों का स्वागत करते हुए कार्यक्रम की जानकारी दी। सभी पूर्व अध्यक्षों ने अपने विचार साझा किए, जिसमें नए सदस्यों की सक्रियता बढ़ाने, पुराने सदस्यों को जोड़ने, कार्यक्रमों में उपस्थिति बढ़ाने, और जैन संस्कार विधि से मांगलिक कार्यक्रमों के आयोजन पर चर्चा की गई। मुनि जिनेश कुमार जी ने बताया कि मंथन एक संगठन की ताकत और विकास का आधार है। मुनिश्री ने भविष्य की कार्य योजनाओं के लिए अतीत का मंथन करने और लक्ष्य

के प्रति संकल्पित रहने पर जोर दिया। कार्यक्रम का समापन मुनिश्री के मंगलपाठ से हुआ। सभी पूर्व अध्यक्षों को परिषद् की ओर से प्रतीक चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन मंत्री अमित बेगवानी ने किया।

### गोरेगांव, मुंबई

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् द्वारा निर्देशित 'मंथन' कल, आज और कल संगोष्ठी तेरापंथ भवन में आयोजित की गई। तेयुप अध्यक्ष सुमित चोरडिया ने स्वागत भाषण दिया। पूर्व अध्यक्षों और वर्तमान कार्यकारिणी टीम की उपस्थिति में पूर्व पदाधिकारियों का स्वागत और उनके कार्यकाल के संस्मरण साझा किए गए। कार्यक्रम में रविजन फॉर विजनलेस नेत्रदान जागरूकता अभियान की शुरुआत की गई। इस अवसर पर महिला मंडल से अध्यक्ष प्रतिमा सांखला, मंत्री ममता चिप्पड़, कोषाध्यक्ष पिंकी सांखला की विशेष रूप से उपस्थिति रही। तेयुप कोषाध्यक्ष महेश चपलोत ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी, मनीष सिंघवी ने अभातेयुप के आयाम के बारे में तेयुप साथियों को जानकारी देते हुए जागरूक किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, तेरापंथ युवक परिषद्, तेरापंथ महिला मंडल, किशोर मंडल एवं पूरे श्रावक समाज का संपूर्ण सहयोग एवं उपस्थिति रही। संचालन और

आभार ज्ञापन मंत्री हितेश राठौड़ ने किया।

### कटक

अभातेयुप के षष्टिपूर्ति के अवसर पर 'मंथन: कल, आज और कल' कार्यक्रम स्थानीय तेरापंथ भवन में आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत पानमल नाहटा ने नमस्कार महामंत्र से की, जिसके बाद तेयुप साथियों ने विजय गीत का संगान किया। तेयुप के संस्थापक अध्यक्ष मोहनलाल सिंघी ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया, जिसे उपस्थित सदस्यों ने दोहराया। परिषद् अध्यक्ष विकास नौलखा ने पूर्व अध्यक्षों और प्रबंधन मंडल का स्वागत करते हुए उनकी सेवाओं को प्रेरणादायक बताया। मंत्री चिराग सिंघी ने परिषद् की गतिविधियों का सारांश प्रस्तुत किया। पूर्व अध्यक्षों ने युवाओं को समाज की रीढ़ बताते हुए उनके महत्व पर जोर दिया। उन्होंने कार्यकारिणी सदस्यों की उपस्थिति, किशोर मंडल का विकास, सदस्यों को आपसी मेलजोल बढ़ाने, युवाओं की भागीदारी बढ़ाने, समय के महत्व को समझने, मोबाइल एडिक्शन और भविष्य को सुधारने के लिए वर्तमान को सशक्त बनाने पर विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में कटक के 29 में से 15 पूर्व अध्यक्षों ने भाग लिया और परिषद् के विकास के लिए सुझाव दिए। संचालन चिराग सिंघी व आभार कमल बेद ने किया।

# तपस्वी व्यक्ति के मस्तिष्क से निकलने वाली तरंगें होती हैं मंगलकारी

## पेटलावद।

जम्बूद्वीप चारों ओर से समुद्र से घिरा हुआ है। जब तक यहाँ त्याग, तपस्या और धर्म की उपस्थिति है, तब तक समुद्र का पानी जम्बूद्वीप में कभी प्रवेश नहीं करेगा। जब तक तीर्थंकर भगवान, लब्धिधारी मुनि और तपस्वी यहाँ निवास करेंगे, तब तक यह सृष्टि भी सुरक्षित रहेगी।

त्यागी और तपस्वी व्यक्ति के शरीर और मस्तिष्क से निकलने वाली तरंगें मंगलकारी होती हैं, जो अशुभ तरंगों का शमन कर देती हैं। तप एक सुरक्षा कवच है। तपस्या जिनशासन की प्रभावना का एक महत्वपूर्ण माध्यम बनती है। उपरोक्त विचार साध्वी उर्मिलाकुमारीजी ने सुहानी पीयूष कोठारी के मासखमण (29

उपवास) की संपूर्णता पर आयोजित तप अभिनंदन समारोह में तेरापंथ भवन में व्यक्त किए। उन्होंने आगे कहा कि कभी-कभी निमित्त मिलने से व्यक्ति की सोई हुई क्षमताएं जाग जाती हैं। हम परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमणजी के श्रीचरणों में नतमस्तक हैं। उनकी कृपा और आशीर्वाद से, तथा सुहानी के मनोबल और परिवार के सहयोग से, यह बड़ी तपस्या सफल हुई है।

साध्वी मृदुलयशाजी ने साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी के संदेश का वाचन करते हुए उनके प्रति विनम्र कृतज्ञता व्यक्त की। साध्वीवृंद ने सामूहिक रूप से सुमधुर गीत की प्रस्तुति दी। इस अवसर पर तेरापंथी सभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष सुनील भांगु, तेरापंथ महिला मंडल द्वारा

सामूहिक गीत, कोठारी परिवार की बहनों द्वारा गीत, तेरापंथ युवक परिषद के कोषाध्यक्ष वैभव मौन्नत, महिला मंडल से प्रतिज्ञा मौन्नत, निर्मला देवी पटवा, हेमलता जैन, पीयूष कोठारी, फूलचंद कांसवा आदि ने तप अनुमोदना में अपने विचार व्यक्त किए।

कार्यक्रम का संचालन तेरापंथी सभा के मंत्री राजेश वोरा ने किया। तेरापंथी सभा द्वारा अभिनंदन पत्र और परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमणजी का आकर्षक चित्र भेंट कर तपस्विनी बहन को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर स्थानीय एवं आसपास के क्षेत्रों से पधारे विभिन्न श्रावक-श्राविकाओं ने तप अनुमोदना में त्याग और तपस्या का संकल्प लिया।

# अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह आयोजन पर प्रेस वार्ता

## दिल्ली।

अणुव्रत विश्व भारती सोसाइटी द्वारा निर्देशित अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह की पूर्व संध्या पर अणुव्रत समिति ट्रस्ट, दिल्ली द्वारा साध्वी डॉ. कुंदनरेखा जी के सान्निध्य में अणुव्रत भवन के सहचिंतन हॉल में कार्यक्रम आयोजित किया गया।

इस प्रेस वार्ता में विभिन्न चैनलों से लगभग 30 से अधिक पत्रकार शामिल हुए, जिन्हें उद्बोधन सप्ताह के निर्धारित दिवस - साम्प्रदायिक सौहार्द दिवस, अहिंसा दिवस, अणुव्रत प्रेरणा दिवस, पर्यावरण शुद्धि दिवस, नशा मुक्ति दिवस, अनुशासन दिवस और जीवन विज्ञान दिवस की विस्तृत जानकारी दी गई। साध्वी श्री ने अपने वक्तव्य में अणुव्रत के बारे में जानकारी दी और प्रत्येक कार्यक्रम की रूपरेखा साझा

की। अणुव्रत विश्व भारती सोसाइटी के महामंत्री भिखमचंद सुराणा ने अणुव्रत के विभिन्न प्रकल्पों की जानकारी प्रदान की। राष्ट्रीय संयोजिका डॉ. कुसुम लुनिया ने प्रत्येक दिवस के आयोजन की सूचना दी और बताया कि दिल्ली समिति इसे बड़े उत्साह के साथ आयोजित करेगी।

दिल्ली समिति के अध्यक्ष मनोज बरमेचा ने सभी पत्रकारों का धन्यवाद करते हुए कार्यक्रम की जानकारी साझा की और अधिक से अधिक लोगों से इन आयोजनों में सम्मिलित होने का आग्रह किया। मंत्री राजेश बैंगानी ने नैतिकता, पर्यावरण जागरूकता, सद्भावना, और नशामुक्ति पर विशेष रूप से प्रकाश डाला। कार्यक्रम में अणुव्रत विश्व भारती सोसाइटी के कार्यकारिणी सदस्य, पूर्व पदाधिकारी आदि उपस्थित थे।

# चित्त समाधि कार्यशाला का आयोजन

## मण्डिया।

साध्वी संयमलता जी ठाणा-4 के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में चित्त समाधि कार्यशाला का आयोजन हुआ जिसकी शुरुआत साध्वीश्री के मंगल मंत्रोच्चार से हुई। पहले चरण में, मैसूर से आए योग ट्रेनर संतोष कोठारी ने एक घंटे की योग क्लास ली, जिसमें महिलाओं को योगासन, स्वास प्रेक्षा, अनुलोम-विलोम और प्राणायाम सिखाया गया। उन्होंने सभी को दिन में कम से कम आधा घंटा योग और प्राणायाम के लिए समय निकालने की प्रेरणा दी।

दूसरे चरण में तेरापंथ महिला मंडल की

अध्यक्षा पूनम बोहरा ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया। साध्वी संयमलता जी ने अपने उद्बोधन में 'स्वस्थ परिवार, स्वस्थ समाज' योजना के तहत चित्त समाधि कार्यशाला का उद्देश्य बताया। उन्होंने कहा कि जीवन में हमें बचपन, यौवन और बुढ़ापे जैसे तीन खजाने मिलते हैं, और अभातेममं समय-समय पर ऐसी कार्यशालाओं का आयोजन करती है ताकि जीवन में बदलाव लाया जा सके। उन्होंने चित्त की निर्मलता और सहिष्णुता के महत्व पर जोर दिया और कहा कि सफलता के लिए वीरता और गंभीरता आवश्यक हैं। साध्वी मार्दवश्री जी ने घर को स्वर्ग बनाने के उपाय बताए। साध्वीश्री ने योग और प्रेक्षा ध्यान के कई

प्रयोग कराए। महिला मंडल की बहनों ने चित्त समाधि पर गीतिका द्वारा मंगलाचरण किया। साध्वी रौनक प्रभा जी ने मन की स्थिरता को चित्त समाधि में सहायक बताया।

कार्यक्रम के तीसरे चरण में मैसूर से पधारी उपासिका वनीता बाफना ने क्रोध को नियंत्रित करने के उपाय बताए। उन्होंने समझाया कि क्रोध आने पर तुरंत प्रतिक्रिया नहीं करनी चाहिए और क्रोध को शांत करने के प्रयोग सिखाए। अंत में साध्वीश्री के मंगल पाठ के साथ चित्त समाधि कार्यशाला का समापन हुआ। महिला मंडल मंत्री टीना दक ने सभी का आभार व्यक्त किया।

## संक्षिप्त खबर

# रक्तदान शिविर का आयोजन

राजराजेश्वरीनगर। तेरापंथ युवक परिषद् राजराजेश्वरीनगर द्वारा द हाई स्ट्रीट, जयनगर एवं जैन यूनिवर्सिटी, जे पी नगर में रक्तदान शिविर का आयोजन जीवरक्षा वॉलंटरी ब्लड बैंक की सहायता से किया गया। अध्यक्ष बिकाश छाजेड़ ने सभी का स्वागत किया। एटीडीसी के राष्ट्रीय सहप्रभारी डॉ. आलोक छाजेड़ के विशेष प्रयास से इन दोनों जगह कैंप का आयोजन हुआ, जिसमें जयनगर में 38 यूनिट एवं जेपी नगर में 26 यूनिट रक्त संग्रह किया गया। इस अवसर पर तेयुप आर आर नगर के कोषाध्यक्ष गौतम नाहटा एवं संगठन मंत्री संदीप बैद ने अपने समय का विसर्जन करते हुए कैंप में सहभागिता निभाई।

उदयपुर। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद् उदयपुर द्वारा झाड़ोल के विद्या निकेतन स्कूल, फलासिया और ओगाना में रक्तदान शिविर का आयोजन भारतीय जनता युवा मोर्चा, उदयपुर ग्रामीण के सहकार से एवं सरल ब्लड बैंक के सहयोग से आयोजित किया गया। ग्रामीण क्षेत्र में लोगों ने उत्साह दिखाते हुए रक्तदान में बढ-चढकर हिस्सा लिया। शिविर में तीनों स्थानों पर कुल 137 यूनिट रक्तदान हुआ। यह कार्यक्रम संयोजक नीरज सामर के अथक प्रयास से सम्पन्न हुआ। ते.यु.प. अध्यक्ष भूपेश खमेसरा एवं मंत्री साजन मांडोट द्वारा रक्तदाताओं को सर्टिफिकेट प्रदान किया गया।

# बीबीएमपी सफाई मित्रों के लिए निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन

## बेंगलुरु।

तेयुप बेंगलुरु द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर, पैलेस गुट्टहल्ली में गांधी जयंती के उपलक्ष्य में बीबीएमपी सफाई मित्रों के लिए निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर आयोजित किया गया। इस शिविर के विशेष अतिथि, स्वास्थ्य मंत्री दिनेश गुंडूराव ने आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर का दौरा किया

और इसके कार्यों की सराहना की। एटीडीसी, राजाजीनगर के संयोजक रजत बैद ने स्वास्थ्य मंत्री को एटीडीसी की गतिविधियों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। इस अवसर पर 55 सफाई मित्रों का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया। कांग्रेस नेता लक्ष्मीकांत का इस शिविर में विशेष सहयोग रहा। उन्होंने कहा कि आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर एक महत्वपूर्ण मानव सेवा का उपक्रम है।

एटीडीसी के सहसंयोजक मुदित कोठारी ने सभी का आभार व्यक्त किया।

शिविर में तेरापंथ युवक परिषद् बेंगलुरु के उपाध्यक्ष मनीष भंसाली, मंत्री राकेश चोरडिया, सहमंत्री अंकित छाजेड़, संगठन मंत्री मोहित डूंगरवाल, नेत्रदान सहसंयोजक हितेश चोपड़ा और अन्य कार्यकर्ताओं की उपस्थिति रही। शिविर को सफल बनाने में संयोजक पंकज भंडारी का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

# 15 दिवसीय कैंप का आयोजन

राजराजेश्वरीनगर। तेरापंथ युवक परिषद् राजराजेश्वरीनगर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर, डेंटल एवं आई केयर में 15 दिवसीय स्वास्थ्य प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में तीन पैकेज रियायती दरों पर रखे गए थे। अध्यक्ष बिकाश छाजेड़ ने कहा कि अभातेयुप के 60 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में इस कैंप का आयोजन किया गया। प्रभारी नरेश बांठिया ने बताया कि इस कैंप में 15 दिनों में लगभग 106 लोग लाभान्वित हुए।

## अष्टदिवसीय शिविर का भव्य आयोजन

## अक्षय शक्ति का कोष है प्रेक्षाध्यान

कांदिवली (मुंबई)।

साध्वी डॉ. मंगलप्रज्ञा जी की प्रेरणा और निर्देशन में श्री तुलसी महाप्रज्ञ फाउण्डेशन के तत्वावधान और उसकी इकाई प्रेक्षाध्यान स्वास्थ्य केंद्र की आयोजना में आयोजित अष्ट दिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर फलदायी सिद्ध हुआ। शिविर के समापन पर, प्रेक्षा-प्रवचन माला के अंतर्गत, साध्वी डॉ. मंगलप्रज्ञा जी ने उपसम्पदा के सूत्रों की विस्तृत व्याख्या की।

शिविर समापन समारोह में उपस्थित शिविरार्थियों और धर्म परिषद को संबोधित करते हुए साध्वीश्री ने कहा कि आत्मदर्शन की दिशा में प्रस्थित होने के लिए शिविरार्थियों ने उत्साह दिखाया, पूरी जागरूकता के साथ साधना की, और आठ दिनों की यह आध्यात्मिक यात्रा अब अग्रिम संकल्प के साथ संपन्न हो रही है। प्रेक्षाध्यान कल्याण वर्ष के उपलक्ष्य में आयोजित यह प्रथम शिविर कांदिवली के लिए सौभाग्य की बात है। डिजिटल डिटॉक्स की दृष्टि से यह शिविर प्रेरणादायक बना, जहाँ साधकों और साधिकाओं ने मोबाइल-मुक्त होकर साधना की। यह भी संयम चेतना का परिचायक है।

साध्वी डॉ. मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि

कल्पना जागती है, वैचारिक सृष्टि उत्पन्न होती है, और जब वह साकार होती है, तो मन प्रसन्न हो जाता है। परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण जी की कृपा से सारे कार्यक्रम निर्विघ्न संपन्न हो रहे हैं। मुंबई में इस प्रकार का आवासीय शिविर पहली बार आयोजित हुआ, जो एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

श्री तुलसी महाप्रज्ञ फाउण्डेशन के अध्यक्ष मेघराज धाकड़ के औदार्य भाव और प्रेक्षा प्रशिक्षकों के समर्पण और श्रम से यह शिविर शिविरार्थियों के लिए एक वरदान साबित हुआ।

शिविरार्थियों के अनुभव सुनकर यह प्रतीत हुआ कि सभी ने तन्मयता से प्रयोग किए, और उन्हें उसका सकारात्मक परिणाम भी मिला। समापन समारोह का आरंभ प्रेक्षा प्रशिक्षकों द्वारा प्रेक्षा-गीत के संगान से हुआ। कई शिविरार्थियों ने अपने अनुभव साझा करते हुए शिविर को लाभकारी बताया। प्रेक्षाध्यान स्वास्थ्य केंद्र के डायरेक्टर, मुंबई सभा के उपाध्यक्ष दलपत बाबेल, प्रेक्षा फाउण्डेशन के चेयरमैन अशोक चंडालिया, सूरजमल दुगड़, उपासक प्रेक्षा प्रशिक्षक शांतिलाल कोठारी और वरिष्ठ प्रशिक्षक नेमी चंद जैन ने विचार व्यक्त किए। उन्होंने साध्वीश्री के निर्देशन में इस शिविर को अपूर्व बताया। शिविरार्थियों

द्वारा प्रेक्षाध्यान योगा डेमो और प्रेक्षा पार्लर कार्यक्रम की शानदार प्रस्तुति की गई। सभी ने सामूहिक संगान कर आगामी शिविर की मांग की। वरिष्ठ प्रशिक्षिका मीना साबद्रा और विमला दुगड़ ने नए अंदाज में आभार व्यक्त किया।

शिविर संयोजन में राजेश बेद का सक्रिय सहयोग रहा। प्रेक्षाध्यान स्वास्थ्य केंद्र की संयोजिका सायरा बेद ने शिविर की रिपोर्ट प्रस्तुत की। शिविर के संचालन में प्रेक्षाध्यान स्वास्थ्य केंद्र के कार्यकर्ता शांता बोहरा, विमला पटेल, परेश पटेल और तेरापंथी सभा कांदिवली के सदस्यों का सक्रिय सहयोग रहा।

साध्वी डॉ. मंगलप्रज्ञा जी के निर्देशन में, साध्वी सुदर्शनप्रभा जी ने प्रेक्षा मंत्र साधना, साध्वी राजुलप्रभा जी ने प्रेक्षाध्यान सिद्धांत, साध्वी चैतन्यप्रभा जी ने प्रेक्षा थैरेपी, साध्वी अतुल्यश्री जी ने अनुप्रेक्षा, और साध्वी शौर्यप्रभा जी ने शरीर विज्ञान के प्रशिक्षण और प्रयोग करवाए। वरिष्ठ प्रशिक्षक पारस दुगड़, मीना साबद्रा, सायरा बेद और विमला दुगड़, तथा शांतिलाल कोठारी ने कायोत्सर्ग, आसन, प्राणायाम और यौगिक क्रियाएं करवाईं।

सभी शिविरार्थियों को प्रमाण पत्र प्रदान किए गए। समापन समारोह का कुशल मंच संचालन प्रेक्षा प्रशिक्षक उपासक पारस दुगड़ ने किया।

## पृष्ठ 1 का शेष

स्वस्थ, उदार और सहनशील...

प्रशम सुख पदार्थों के माध्यम से प्राप्त नहीं होता; यह कषायों के मंद पड़ने से मिलता है। किशोर मंडल द्वारा चौबीसी गीत का संगान हुआ। डीसा (गुजरात) के समाज ने सन् 2025 अक्षय तृतीया का लोगो अनावरण परम पूज्य की सन्निधि में किया। गुजरात के प्रतिपक्ष नेता अमित भाई चावड़ा ने अपनी भावना व्यक्त की। डीसा समाज ने गीत की प्रस्तुति दी। 1 से 49 तक की लड़ी करने वाले मुनि पारसकुमार ने अपनी भावनाएं व्यक्त की। जीवन काल के 106 वर्ष पूर्ण कर 107वें वर्ष में प्रवेश कर रही साध्वी बिदामांजी के प्रति पूज्यवर ने मंगलभावना व्यक्त की। गांधीधाम ज्ञानशाला की सुंदर प्रस्तुति हुई। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

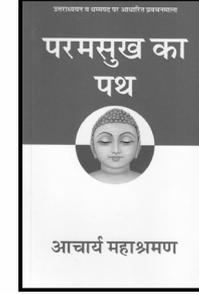
आत्मा को राग...

जैन साधु मधुकर की तरह भिक्षा ग्रहण करते हैं और गृहस्थों के घरों से जो सहज उपलब्ध हो, उसे थोड़ा-थोड़ा ग्रहण करते हैं। हिंसा भी न हो और संयम भी हो जाए। आज दो धाराओं का सम्मिलन हो रहा है। स्वामीनारायण संप्रदाय से हमारा संपर्क वर्षों से है। आत्मा को राग-द्वेष मुक्त करके वीतराग बने और मोक्ष प्राप्त करें। हम धर्म-अध्यात्म की साधना करते

हुए जितना हो सके जनता का कल्याण करें। स्वामीनारायण संप्रदाय के संत नारायण मुनिदासजी ने कहा कि आज हमें बहुत आनंद हो रहा है। आचार्यश्री महाप्रज्ञाजी की भी स्मृति हो रही है। हमारे संतों में गोचरी की भावना थी। संतों के समागम से हमारा जन्म सुफल हो जाता है। संतों के समागम से तप-जप के गुण आते हैं। हमारा सभी के प्रति क्षमा का भाव रहे। आचार्यश्री महाश्रमणजी जो बताते हैं, वे स्वयं उसका आचरण करते हैं। किसी के प्रति बैर भावना न हो। आपके दिए ज्ञान को हम ग्रहण कर जीवन को सफल बनाएं। संत मुनि वन्दनदास जी ने अपने विचार अभिव्यक्त किए। प्रमुख स्वामी महंत के शुभेच्छा पत्र का वाचन जिनेश नरोला ने किया। 30 लाख से अधिक पेड़ लगाने वाले डॉ. राधाकृष्ण देव ने अपनी भावनाएं व्यक्त की। जैन विश्व भारती की ओर से मंत्री सलिल लोढ़ा ने जय तुलसी विद्या पुरस्कार की जानकारी दी। वर्ष 2024 का पुरस्कार भगवान महावीर विश्वविद्यालय, सूरत को प्रदान किया गया। इस सन्दर्भ में संजय जैन ने अपनी भावना व्यक्त की। विजय सेठिया ने चौथमल कन्हैयालाल सेठिया चैरिटेबल ट्रस्ट की जानकारी प्रस्तुत की। पूज्य प्रवर के बाव प्रवास के सन्दर्भ में क्षेत्र की ओर से लोगो का अनावरण किया गया। तेरापंथ महिला मण्डल-छापर ने गीत की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

## बोलती किताब

## परमसुख का पथ



**उत्तम सुगन्ध : सदाचार:-** दुनिया में फूल होते हैं। फूलों में सुगन्ध होती है। किन्तु धम्मपदकार ने कहा कि जिस आदमी में शील होता है, उसके शील की सुगन्ध भी बहुत अधिक होती है। शील एक सदाचारमय जीवन है। सदाचार और सद्विचार की अपने ढंग की सुगन्ध होती है।

व्यवहार में भी आदमी चिंतन को इतना उदात्त बनाए, दृष्टिकोण को इतना उदार बनाए कि उसकी विशालता प्रकट हो जाए। एक चिंतन के द्वारा आदमी दुःखी बन जाता है तो एक चिंतन के द्वारा आदमी सुखी भी बन सकता है। आदमी का चिंतन कैसा है, यह महत्त्वपूर्ण बात होती है।

आदमी यह सोचकर उपेक्षा न करे कि थोड़ा-सा पाप है। क्या खास बात है। थोड़ा-थोड़ा पाप ही भारी पड़ सकता है। ग्रन्थकार ने सुन्दर व्यावहारिक उदाहरण दिया कि जिस प्रकार बूंद-बूंद से घड़ा भर जाता है, उसी प्रकार थोड़ा-थोड़ा पाप करते-करते पाप का घड़ा भर जाता है। पाप का भरा हुआ घड़ा कभी न कभी अवश्य फूटेगा और सारी बातें सामने आ जाएंगी। फिर उसका परिणाम भोगना पड़ेगा।

संसार में जितना भी दुःख है, वह काम की अनुवृद्धि से पैदा होने वाला है, कामना से उत्पन्न होने वाला है। इसलिए कामना को छोड़ दें तो साधना निर्मल बन जाएगी और साधना निर्मल होगी तो उसकी सुगंध देवों तक भी फैल सकती है। साधना को आगे से आगे बढ़ाने का और परिष्कृत करने का प्रयास करते रहें, यही काम्य है।

आदमी को शांति प्राप्ति के लिए आकांक्षाओं का परित्याग करना चाहिए। जैन श्रावकाचार में श्रावक के बारहव्रत आते हैं। उनमें पांचवां व्रत है-इच्छा परिमाण। अनिच्छ बनना तो सबके लिए संभव नहीं, परन्तु आदमी महेच्छ यानी ज्यादा इच्छा वाला न बने अपितु अल्पेच्छ बने। वह इच्छाओं की सीमा करने वाला बने। इच्छाओं की सीमा हो जाती है, संतोष मन में आ जाता है तो आदमी को सुख मिलता है।

आत्म-संयम की साधना करने वाला व्यक्ति शोकमुक्त बन जाता है, विप्रमुक्त बन जाता है, सब ग्रन्थियों से रहित हो जाता है। वह व्यक्ति दुनिया में दुःखी नहीं होता, कष्ट नहीं झेलता, उसकी शान्ति चिरस्थायी हो जाती है।



पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क करें :

आदर्श साहित्य विभाग जैन विश्व भारती

+91 87420 04849 / 04949 <https://books.jvbharati.org> [books@jvbharati.org](mailto:books@jvbharati.org)

## नवाहिक आध्यात्मिक अनुष्ठान का आयोजन किया गया

रायपुर।

मुनि सुधाकर कुमार जी के सान्निध्य में नवरात्रि के शुभ अवसर पर नवाहिक आध्यात्मिक अनुष्ठान का आयोजन किया गया। यह अनुष्ठान नियमित प्रवचन श्रृंखला 'विघ्न हरण की ढाल' के साथ जय समवशरण में संपन्न हुआ।

मुनि सुधाकर जी ने उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं को संबोधित करते हुए कहा कि नवरात्रि के नौ दिनों का जैन धर्म में भी विशेष महत्व है। नवरात्रि शक्ति की उपासना का सर्वोत्तम समय है। उन्होंने

बताया कि जैन धर्म के प्रत्येक तीर्थंकर की अपनी अधिष्ठायक देवियां होती हैं, जो इस उपासना की महत्ता को दर्शाती हैं। जैन धर्म में मंत्रों का विशेष महत्व है, मंत्र साधना से सिद्धि और शक्ति प्राप्त की जा सकती है। जो कार्य सामान्य साधनों से संभव नहीं हो पाता, वह साधना से सिद्ध किया जा सकता है। मुनिश्री ने कई उदाहरणों के माध्यम से मंत्रों की शक्ति को स्पष्ट किया। मुनि नरेश कुमार जी ने नवाहिक आध्यात्मिक अनुष्ठान के अंतर्गत मंत्रों का उच्चारण कराते हुए अनुष्ठान संपन्न करवाया।

# सम्यक् दृष्टि एवं चारित्र का धारक होता है मुनि : आचार्यश्री महाश्रमण संयम सुमेरु की सन्निधि में सूरत के तीसरे दीक्षा समारोह की हुई घोषणा

सूरत।

16 अक्टूबर, 2024

संयम के सुमेरु आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आयारो आगम वाणी की अमृत वर्षा करते हुए फरमाया कि इसके तीसरे अध्याय में बताया गया है कि जो अमुनि होते हैं, वे सदा सोए रहते हैं, जबकि मुनि सदा जागृत रहते हैं। ज्ञानी व्यक्ति मुनि होते हैं; ज्ञान के साथ उनमें संयम और अहिंसा की चेतना भी आ जाती है। उनमें परिग्रह का त्याग होता है। मुनि में सम्यक् ज्ञान होता है। सम्यक् दृष्टि वाला व्यक्ति, जो चारित्रवान हो, वह मुनि होता है।

मुनि सोते हुए भी जागता रहता है। वह धार्मिक और तात्त्विक जागरूकता रख सकता है। आचार्य श्री भिक्षु और विजयसिंहजी पटवा के प्रसंग के माध्यम से पूज्य प्रवर ने समझाया कि मुनि नींद की परवाह किए बिना तात्त्विक धार्मिक चर्चा कर सकते हैं।

आचार्य श्री भिक्षु और मुनि खेतसीजी के प्रसंग से यह भी समझाया कि सेवा के लिए मुनि को रात्रि जागरण भी करना पड़ सकता है।

जो अज्ञानी होते हैं, वे जागते हुए



भी सोए हुए रहते हैं। प्रमाद के कारण आदमी जागते हुए भी सोते के समान होता है, जो सघन कर्मों का बंधन कर सकता है। आयारो में बताया गया कि जो मुनि अर्थात् ज्ञानी लोग होते हैं, वे सोते हुए भी जागृत अवस्था में हो सकते

हैं। साधु का साधुपन नींद में भी बना रहता है। नींद में भी जागरूकता होनी चाहिए। तीर्थंकर की माता तो स्वप्न देखने के बाद सोती नहीं हैं। कुछ सपने भविष्य की सूचना दे सकते हैं। कभी-कभी मन में चल रही बात भी स्वप्न

में आ सकती है। स्वप्न में भी साधुपन रहना चाहिए।

आज आश्विन शुक्ला चतुर्दशी है। हमारे धर्मसंघ के परम पूजनीय चतुर्थ आचार्य श्रीमद् जयाचार्य का जन्म दिवस है। वे एक महान और विशिष्ट

व्यक्तित्व थे। छोटी उम्र में ही साधु बन गए और क्रमशः उनका विकास भी हुआ। आचार्य भिक्षु के तो वे मान्य भाष्यकार थे, ज्ञानी श्रुतधर आचार्य थे। अंत समय में वे साधना में लग गए थे। पूज्य मधराजजी जैसे उन्हें युवाचार्य मिले, जिनसे वे गण की चिंता से मुक्त हो गए थे।

आज चतुर्दशी हाजरी का दिन है और साथ ही जयाचार्य के जन्मदिन का प्रसंग भी है। हमारे भीतर भी उनकी ज्ञान की चेतना, साधना की चेतना और व्यवस्था की चेतना का विकास हो।

मंगल प्रवचन के पश्चात् पूज्य प्रवर ने कार्तिक शुक्ला नवमी 10 नवम्बर 2024 को मुमुक्षु चन्द्रप्रकाश को मुनि दीक्षा प्रदान करने की घोषणा की। ज्ञातव्य है कि इससे पूर्व सूरत में आचार्यश्री दो दीक्षा समारोह कर चुके हैं। पूज्यप्रवर की सन्निधि में सूरत में यह तीसरा दीक्षा समारोह होगा।

पूज्यवर ने हाजरी का वाचन कराते हुए मर्यादाओं के प्रति जागरूक रहने की प्रेरणा दी।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

## जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्म संघ की सबसे वयोवृद्ध साध्वी सुदीर्घजीवी 'शासनश्री' साध्वी बिदामाजी का 107वें वर्ष में प्रवेश

कालू।

तेरापंथ भवन कालू में साध्वी उज्जवलरेखा जी के सान्निध्य में सुदीर्घजीवी 'शासनश्री' साध्वी बिदामाजी के 107वें जन्म दिवस एवं संयम पर्याय के 84वें वर्ष प्रारंभ पर तप अनुष्ठान संपन्न हुआ। कार्यक्रम का प्रारंभ साध्वीश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र से हुआ। साध्वीश्री ने कहा साध्वी बिदामाजी महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमण जी के युग का एक कीर्तिमान है। कीर्तिमानों की श्रृंखला में यह भी कड़ी जुड़ी हुई है।

सुदीर्घजीवी 'शासनश्री' साध्वी बिदामाजी आज 107वें वर्ष में प्रवेश कर रही हैं, दिनांक 25 अक्टूबर को संयम पर्याय के 84वें वर्ष में प्रवेश कर लेंगे। साध्वी बिदामाजी दृढ़ मनोबल की धनी हैं। उम्र के इस पड़ाव में भी अपनी साधना के प्रति पूर्ण जागरूक हैं। ध्रुव

योगों के प्रति सजग हैं। खाद्य संयम, मौन, स्वाध्याय आदि नियमित रूप से चलते हैं। कभी-कभी दर्शनार्थियों का तांता सा लगा रहता है, आने वालों को जिकारा देना, मंगल पाठ सुनाना, कुछ नियम दिलाना आदि क्रियाएं भी चलती रहती हैं।

लगभग 14 वर्ष की उम्र में ही आपका विवाह हो गया था। विवाह के छह माह पश्चात ही आपका जीवन साथी महामारी की चपेट में काल कवलित हो गया। उन्हीं दिनों में महामनस्वी अष्टम आचार्य कालूगणी का पीपली (मेवाड़) ग्राम में पदार्पण हुआ। भाग्योदय से सेवा उपासना का सौभाग्य पाकर आपका जीवन धन्य हो गया। कालूगणी की पावन प्रेरणा पाकर आपका मन वैराग्य रस से अप्लावित हो गया। आपने पंचवर्षीय जेठूती भीखीकुमारी को वैराग्य रस से भावित किया। विक्रम संवत्

1998 कार्तिक कृष्ण नवमी को काकी जेठूती दोनों की दीक्षा गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी के कर कमलों से राजलदेसर में संपन्न हुई।

यह इनकी पुण्यवता है कि इस नंदनवन जैसे भैक्षव शासन में दीक्षित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ और आचार्य श्री महाश्रमण के युग में कीर्तिमानों की श्रृंखला में जुड़कर धन्य धन्य हो गई। इस युग की यह सबसे बड़ी बात है किसी भी प्रकार की औषधि का सेवन नहीं करना। बीमारी तो इनके शरीर में भी आती है पर इनका संकल्प बल बहुत मजबूत है। ये सहज, सरल, कर्मठ एवं सेवाभावी साध्वी हैं। सहिष्णुता, मिलनसारिता आपके नैसर्गिक गुण हैं। स्वाध्याय प्रियता, मधुरभाषिता, वाक् संयम, दृढ़ संकल्प आपके जीवन के अनुस्यूत गुण हैं। गुरु दृष्टि की आराधना आपके जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य रहा है।

जीवन के ग्यारहवें दशक में चलते हुए भी आपकी ओजस्विता भीतरी शक्तियों और साधना के तपोबल को उजागर कर रही है। 98 वर्षों की उम्र तक आपने ग्रामानुग्राम विहरण किया है। 84 वर्षों की वय तक पाद विहार किया है। 98 वर्षों के पश्चात कालू धाम में स्थिर वास किया है। यहां पर हमें नौवां वर्ष चल रहा है फिर भी लोगों में इनके व्यक्तित्व के प्रति आकर्षण दिनों-दिन बढ़ता जा रहा है। कालू की धरा पर मां काली का ऐतिहासिक मंदिर है। मां काली के दर्शनार्थ आने वाले यात्रीगण भी इस युग के आठवें अजूबे को देखने आते रहते हैं। मातृ स्वरूप साध्वी बिदामाजी के दर्शन करने अहोभाव प्रकट करते हैं। उम्र के इस पड़ाव में भी आप प्रतिमाह 5 उपवास करती हैं, कभी-कभी बेला, तेला, चोला, पंचोला भी करती हैं। पूज्यप्रवर अपने मुखारविंद से कई बार आपका

नामोल्लेख करवाने की कृपा करवाते हैं। आज के दिन आपके संयम साधना की मंगल कामना करती हुई मैं यही कहना चाहती हूँ कि आप स्वस्थ रहें, आपकी आत्मा का उध्वारोहण होता रहे, आप अपनी लक्षित मंजिल को प्राप्त करें।

साध्वी वृंद ने का सामूहिक संगान किया। युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी द्वारा साध्वी बिदामाजी के लिए फरमाए गए आशीर्वचनों को सुनाया गया। साध्वी स्मितप्रभाजी ने साध्वीप्रमुखाश्री के संदेश का वाचन किया। सुदीर्घजीवी शासनश्री साध्वी बिदामाजी के 107 वें जन्म प्रवेश पर 135 एकासन हुए।

महिला मंडल, कन्या मंडल, नाथूलाल चावत, पूनम चंद मांडोत, प्रेमचंद चावत, सभा अध्यक्ष बुद्धमल लोढ़ा, पड़िहारा महिला मंडल ने गीतिका एवं वक्तव्य के माध्यम से अपनी भावनाएं व्यक्त की।

# क्षमा, समानता और समता का रखें भाव : आचार्यश्री महाश्रमण

## विश्व शांति के उन्नायक की सन्निधि में पहुंचे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत

सूरत।

17 अक्टूबर, 2024

जिन शासन प्रभावक आचार्यश्री महाश्रमण जी की पावन सन्निधि में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत दर्शनार्थ पहुंचे। डॉ. भागवत प्रायः प्रतिवर्ष पूज्यवर की सन्निधि में पहुंचते हैं।

ज्ञान के महासागर आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आगम वाणी का रसास्वाद कराते हुए फरमाया कि हमारे शास्त्र, जिन्हें हम आगम कहते हैं, से अतींद्रिय ज्ञान भी प्राप्त किया जा सकता है। ये धर्म से जुड़े हुए शास्त्र हैं, जिनमें बताया गया है कि सभी आत्माएं समान हैं, इसलिए प्राणी मात्र की हिंसा नहीं करनी चाहिए।

आत्मा के असंख्य प्रदेश होते हैं। आत्मा पूरे लोक में फैल सकती है और संकोच भी कर सकती है। सभी सुख चाहते हैं, जीना चाहते हैं; कोई मरना नहीं चाहता, इसलिए जीव हिंसा नहीं करनी चाहिए। पर प्राणी से अनचाहे भी हिंसा हो सकती है। साधु तो पांच महाव्रतधारी होते हैं और वे जीव हिंसा से वंचित रहते हैं। वे न हिंसा करते हैं, न करवाते हैं,



हमें क्षमा, समानता और समता का भाव रखना चाहिए। 'मार सके, मारे नहीं, ताको नाम मर्द।' हमारे व्यवहार और वाणी में अहिंसा का भाव हो, सभी के साथ मित्रता का भाव रखें। अहिंसा एक नीति है जो परिवार, समाज या राष्ट्र सभी में होनी चाहिए। विचार भेद, मतभेद हो सकते हैं, लेकिन मन भेद नहीं होना चाहिए। अहिंसा धर्म हर नागरिक का धर्म है।

नहीं होती। वर्तमान में दुनिया में अनेक समस्याएं बढ़ रही हैं, और मनुष्य का जीवन संकटग्रस्त हो गया है। यदि हम अनुशासन का पालन करें, तो सुख कभी मंद नहीं होगा।

अध्यात्म हमें जीवन जीना सिखाता है और आवश्यकता पड़ने पर जीवन छोड़ना भी सिखाता है। अविद्या के परे सत्य को प्राप्त करना है। हमारे जीवन का आधार अध्यात्म है। सभी को समान रूप से जीने का अधिकार है। यदि हम सही कार्य करेंगे, तो पूरी दुनिया हमसे प्रेरित होगी। हमें सही चिंतन रखना चाहिए। गुरु का श्रद्धा से पूजन करें, उनके उपदेशों के अनुसार चलें। सत्य बोलें और हितकारी बोलें। स्वाध्याय से स्वभाव में बदलाव लाया जा सकता है। मन को पवित्र और सौम्य रखें। संतों की वाणी सुनकर हम अपना जीवन बदलें, जिससे परिवार, समाज और राष्ट्र में भी बदलाव आएगा। व्यवस्था समिति के अध्यक्ष संजय सुराना एवं स्वागताध्यक्ष संजय जैन ने अपनी भावनाएं व्यक्त की। व्यवस्था समिति द्वारा डॉ. मोहन भागवत का सम्मान किया गया।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

और न ही हिंसा का अनुमोदन करते हैं।

साधु माधुकरी वृत्ति से आहार ग्रहण करते हैं। मैं भी संघ के नागपुर कार्यालय में गया था और वहां भिक्षा भी ली थी। साधु तो जीव हिंसा से बचते हैं, जबकि आम आदमी हिंसा से पूर्णतः बच नहीं सकता है। लेकिन अनावश्यक हिंसा से बचना चाहिए। देश की रक्षा के लिए आवश्यक हिंसा की आवश्यकता हो सकती है, लेकिन साधु शस्त्र का प्रयोग नहीं करते, चाहे उनका जीवन चला जाए। इस कारण गृहस्थ को आवश्यक हिंसा करनी पड़ सकती है, पर अनावश्यक हिंसा से गृहस्थ को

बचना चाहिए। बिना मतलब किसी को तकलीफ नहीं देनी चाहिए।

हमें क्षमा, समानता और समता का भाव रखना चाहिए। 'मार सके, मारे नहीं, ताको नाम मर्द।' हमारे व्यवहार और वाणी में अहिंसा का भाव हो, सभी के साथ मित्रता का भाव रखें। अहिंसा एक नीति है जो परिवार, समाज या राष्ट्र सभी में होनी चाहिए। विचार भेद, मतभेद हो सकते हैं, लेकिन मन भेद नहीं होना चाहिए। अहिंसा धर्म हर नागरिक का धर्म है।

श्री मोहनजी का समागमन हुआ है, जो एक चिंतनशील व्यक्तित्व हैं।

आर.एस.एस. का सौवां वर्ष शुरू हो गया है। आचार्य महाप्रज्ञ जी के समय भी सुदर्शनजी आए थे। आपके अच्छे विचारों से धार्मिक-आध्यात्मिक दिशा मिलती है। जीवन में अहिंसा और संयम से आत्मा और समाज अच्छे बने रहते हैं।

डॉ. मोहन भागवत ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि मनुष्य जीवन के लिए जो शाश्वत बातें हैं, वे आचार्यों द्वारा कही जाती हैं। सुख की खोज में जीवन आगे बढ़ता है। सभी जीव समान हैं, लेकिन सुख-दुःख मन की भावना पर निर्भर होते हैं। बाहरी सुख सीमित होता है, और मन की इच्छाएं कभी पूरी

## आचार्यश्री महाश्रमण : चित्रमय झलकियां

